

ख्वाब, इश्क़ और खून के बीच
सच की तलाश

दीपक सिंह चंदेल

BlueRose ONE .com
Stories Matter
NewDelhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Deepak Singh Chandel 2026

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.



For permissions requests or inquiries regarding this publication, please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-81-6744-592-6

Cover Design: Sharvi Singh
Typesetting: Sagar

First Edition: September 2026

प्रस्तावना

मनुष्य की सबसे बड़ी लड़ाई अक्सर दुनिया से नहीं, स्वयं से होती है। परिस्थितियाँ उसे गिराती हैं, लोग उसे भटकाते हैं, रिश्ते उसे तोड़ते हैं और कभी–कभी उसकी अपनी महत्वाकांक्षाएँ उसे उस अंधेरे रास्ते पर ले जाती हैं, जहाँ लौटने के लिए पीछे मुड़ना भी संभव नहीं रहता।

'चीता' ऐसे ही एक नौजवान की कहानी है।

एक ऐसा युवक, जिसकी आँखों में बड़े सपने हैं और भीतर कुछ कर गुजरने की बेचैनी रूप–रंग से आकर्षक, बुद्धि से असाधारण और अपनी बातों से किसी को भी प्रभावित कर लेने वाला यह युवक अभावों के बीच पला है। घर की आर्थिक तंगी, शराब में डूबे पिता और बिखरते परिवार के बीच भी उसके भीतर आगे बढ़ने की आग बुझती नहीं। वह जानता है कि उसे अपनी किस्मत स्वयं लिखनी है।

लेकिन जीवन हमेशा हमारी इच्छाओं के अनुसार नहीं चलता।

एक छोटी–सी घटना उसके विश्वास की नींव हिला देती है। प्रेम, मित्रता और भरोसे के बीच खड़ा वह युवक जब अपने ही सबसे निकट संबंधों को टूटते देखता है, तो गांव की मिट्टी छोड़कर शहर की ओर निकल पड़ता है। शहर उसे अवसर देता है। उसकी प्रतिभा और महत्वाकांक्षा उसे ऊँचाइयों तक पहुँचाती है। वह, वह सब पाने लगता है, जिसकी कभी उसने कल्पना की थी।

परन्तु सफलता के रास्ते में कुछ ऐसे मोड़ आते हैं, जहाँ मनुष्य और उसके भीतर का अंधकार आमने–सामने खड़े हो जाते हैं।

वह युवक भी धीरे–धीरे उसी अंधकार में उतरता चला जाता है। शराब, शबाब, अपराध, छल और ऐसे रिश्तों के जाल में, जिनसे निकलना आसान नहीं। एक हत्या उसे कानून के कठघरे तक ले जाती है। मुकदमे उसके पीछे लगते जाते हैं और उसकी चमकती हुई जिंदगी धीरे–धीरे धुंधली पड़ने लगती है। इसी उथल–पुथल के बीच विवाह उसके जीवन में एक स्त्री को लाता है, जो उसके भीतर बचे हुए अच्छे इंसान को बचाए रखने का हर संभव प्रयास करती है।

लेकिन अतीत कभी इतनी आसानी से पीछा नहीं छोड़ता।

एक युवक का उसके जीवन में प्रवेश फिर वही दरवाजे खोल देता है, जिन्हें बंद करने में वर्षों लगे थे। शराब और ऐयाशी के उस दलदल में वह दोबारा धँसने लगता है। पत्नी रोकती है, समझाती है, संघर्ष करती है, मगर वह एक ऐसे जाल में फँस चुका है, जिसकी डोर उसके हाथ में नहीं है।

और फिर...

एक हत्या होती है।

एक ऐसी हत्या, जिसके पीछे छिपे प्रश्न अनेक हैं और उत्तर किसी के पास नहीं।

कातिल कौन है? हत्या का कारण क्या है? और सबसे बड़ा प्रश्न, क्या अपराध केवल वही है, जो कानून की किताबों में लिखा जाता है, या किसी मनुष्य को धीरे–धीरे बर्बाद करने वाले लोग भी किसी अपराध के भागीदार होते हैं?

'चीता' केवल एक मर्डर मिस्ट्री नहीं है। यह महत्वाकांक्षा, प्रेम, विश्वासघात, लालच, नशे, अपराध और परिवार के टूटते रिश्तों के बीच फँसे एक मनुष्य की मनोवैज्ञानिक यात्रा है। यह उन लोगों की कहानी भी है, जो किसी एक व्यक्ति के अपराध की कीमत पूरी जिंदगी चुकाते हैं।

कभी बेटियाँ पिता की गलतियों का बोझ उठाती हैं, कभी पत्नी, पति के अपराधों की छाया में जीती है और कभी एक अपराध की तलाश करते–करते पुलिस उन चेहरों तक पहुँचती है, जो स्वयं को निर्दोष समझते रहे हैं।

इस कहानी में हर चेहरा एक प्रश्न है, हर रिश्ता एक रहस्य और हर मोड़ एक नई आशंका।

क्योंकि चीता केवल जंगल में शिकार नहीं करता, कभी–कभी मनुष्य अपने ही भीतर छिपे चीते का शिकार बन जाता है।

और जब सच सामने आता है, तब तक बहुत कुछ खो चुका होता है।

चीता एक मर्डर मिस्ट्री

नाम भोखू ठाकुर, मगर इनका मिजाज और अंदाज लोगों से जुदा है।

इस बात को भोखू बखूबी जानता है और उसको खुद पर भरोसा ये दिल मांगे मोर से भी कुछ ज्यादा है।

यही वजह है कि भोखू खुद को औरों से अलग दिखाने की चाह में रहता है और अपने आप को चीता कहलाना पसंद करता है।

चीता अपने घर का सबसे बड़ा बेटा है।

चीता के परिवार में कुल चार सदस्य हैं। मां–बाप और एक छोटा भाई।

घर की माली हालत कुछ खास अच्छी नहीं है। चीता के पिता भाम ेर सिंह किसी जमाने में एक ठीक–ठाक दवा की दुकान चलाते थे, पर अब न तो दवा है और न ही दुकान। ऐसे खराब हालात होने की वजह भाम ेर सिंह का भाराबी होना है।

भाम ेर सिंह चार भाई हैं।

सभी भाई भााम को सूर्य अस्त–ठाकुर मस्त का राग छेड़तें हैं।

मतलब भाराब के न ो में हो जाते हैं।

चीता की पढ़ाई गांव के ही सरकारी स्कूल में हुई है।

चीता पढ़ने में जितना अच्छा है, उससे कहीं ज्यादा वह दिमाग का भाातिर है।

इसी चालाकी के हुनर से वाकिफ परिवार वालों को चीता पर बड़ा नाज है।

बहस किसी भी मुद्दे पर हो, हर जगह चीता की अपनी अलग राय होती है। भले ही चीता को उस विशय की एबीसीडी न पता हो।

वह अपनी बात को सही ठहराने के लिए हर तरह का जतन करता है और तमाम अनाप–सनाप तर्क भी देता है।

चतुर चीता अब बारहवीं पास चुका है और अपनी जवानी की दहलीज पर है।

छह फिट लंबा, रंग गोरा, छरहरी काया लिए चीता जब झूमते हुए चलता है तो गांव–गराज के लोग देखते ही रह जाते हैं।

अब भाायद चीता को भी अपनी सुंदर काया पर गुमान होने लगा है।

पर मुफलिसी उसके सपनों में दीवार खड़ी कर रही है।

गर्मी का मौसम है, चीता और उसके सभी दोस्त चौराहे पर बैठे हैं।

चीता सभी को अपनी मस्ती भरी बातों से आनंदित कर रहा है।

इसी बीच चीता दोस्तों से पूछता है?

तुम लोगों ने आगे क्या करने का सोचा है?

चीता का दोस्त बबलू बोलता है...

करना क्या है... आगे पढ़ाई करनी है और क्या

सभी दोस्त बबलू की हां में हां मिलाते हैं।

फिर बबलू चीता से पूछता है?

चीते तुम क्या करोगे?

तुम्हारे तो अच्छे नंबर भी है।

चीता फटाक से बोलता है, मुझे तो हीरो बनना है, बॉलीवुड पर राज करना है।

बातचीत और मटरगस्ती का दौर चलता रहता है।

इस बीच बबलू चीता से पूछता हैं...

अरे यार ये बताओ, तुम्हारी गुंजा का क्या हुआ?

बात कुछ आगे बढ़ी तुम्हारी...

चीता बेहिचक होकर कहता है..

अरे यार बबलू तुम तो जानते हो अपने दोस्त को

जिसको मैने एक बार देख लिया समझो वो मेरी।

और फिर इस एक किलो मीटर की रेंज में मेरे जैसा कोई दूसरा हैंडसम लड़का है क्या?

गुंजा मेरी है और उसको हम मंजूर है।

वह हीरो की हीरोईन बनेगी।

दोस्तों की मजलिस खत्म होती है और सभी अपने–अपने घर चले आते हैं।

रात होती है और चीता भी खा–पीकर अपने कमरे में सोने चला आता है।

लेकिन चीता की नींद गायब है।

उसके ख्यालों में गुंजा है और गुंजा की गूंज उसके कानों में गूंज रही है।

रात किसी तरह ख्यालों में कटती है।

चीता, अपने आप को चाचा चौधरी मानता है।

रोज एक नया प्लान उसके पास होता है।

सुबह होती है और चीता बिस्तर से उठकर सीधे बबलू के घर पहुंच जाता है।

बबलू चीता से पूछता है...

अरे चीते सब ठीक तो है, अचानक इतनी सुबह कैसे?

चीता बबलू से कहता है...

सब ठीक है मेरे दोस्त...

तुम तो जानते ही हो अपने दोस्त को, मेरा दिमाग सुपर कमांडो ध्रुव से भी तेज चलता है। मुझे भला क्या हो सकता है, मुझको तो राज करना है दुनिया पर।

चीता बबलू से कहता है...

अच्छा सुनो...

कुछ प्लान है मेरा मगर अभी सीक्रेट है।

यार बबलू तुम्हे मेरा एक काम करना है।

मैं ाहर जा रह हू...

तुम गुंजा को लेकर तीन बजे मेरे घर आ जाना।

मैं तुम लोगों को अपने घर पर मिलूंगा।

क्यो बबलू आ जाओगे!

बबलू कहता है...

हां मैं समझ गया...

मैं गुंजा को अभी किसी बहाने से मिलकर बोल देता हूं।

चीता ठीक है बबलू बाय...

अब घर पहुंचते ही चीता मां से झूठ बोलकर नौकरी का फार्म भरने के लिए कुछ पैसे लेता है और बिना खाए–पिए साइकिल उठाकर भाहर के लिए निकल जाता है।

गर्मी का मौसम है, दोपहर का समय है, सूरज भी सिर पर है और उस पर गर्म हवा पर चीता के अंदर की गर्मी इससे कहीं ज्यादा है।

सामने से गांव के ही एक बुजुर्ग रामलाल आ रहे थे।

उन्होंने चीता से पूछा, का चीते इतनी तेज धूप में कहां भागे जा रहे हो।

चीता अपनी साइकिल की गति को और तेज करते हुए बुजुर्ग दादा को जवाब देता है...

इस गर्मी से ज्यादा गर्मी मेरे अंदर है बाबा और इतना कहकर आगे बढ़ जाता है।

चीता भाहर पहुंच कर सीधे एक दुकान के अंदर जाता है जहां तोहफा वगैरहा मिलते हैं।

वहां से एक गुलाब का गुलदस्ता और साथ में चॉकलेट का डिब्बा लेकर बिना रूके, बिना थके साइकिल पर सवार हो जाता है।

उधर बबलू गुंजा से मिलता है और उसे चीता का सारा प्लान बताता है।

बबलू गुंजा से पूछता है?

सच बताओ रे गुंजा, क्या मामला है, तुम दोनों के बीच

गुंजा कहती है, कुछ नहीं रे...

मुझे नहीं मालूम कि चीता भाहर क्यों गया है...

हमने तो उसे नहीं भेजा है।

बबलू ने गुंजा से कहा...

सुनो गुंजा तीन बजे चीता के घर पर मिलते हैं।

गुंजा बबलू से इ ाारे में हां बोलती है।

बबलू और गुंजा तीन बजे चीता के घर पहुंच जाते हैं।

दोपहर का समय है, मौसम में उमस है मगर हल्की पुरवाई बह रही है।

ऐसे में घर के सभी लोग सो रहे हैं।

बबलू और गुंजा चीता के कमरे में जाकर बैठ जाते हैं।

कुछ देर तक इंतजार करने के बाद बबलू गुंजा से बोला...

कहां रह गया ये चीता?

अरे गुंजा!

हाथ में मेंहदी लगा रखा है, जरा दिखाओ तो...

बबलू गुंजा के और करीब आते हुए...

गुंजा भार्माते हुए बोली, नहीं दिखाना मुझे, दूर ही रहो...

मगर बबलू गुंजा का हाथ पकड़ लेता है।

हाथ छूते ही बबलू का रोम–रोम सिहर उठता है...

उसकी सांसे गर्म हो जाती है।

गुंजा की आंखे भारबती हैं और इतने करीब से बबलू ने उसे पहले कभी देखा नहीं था।

अब बबलू अपना संयम खो चुका है और दोस्ती की मर्यादा भी।

वह गुंजा की भारबती आंखों में इस कदर घुल गया है कि उसे यह भी हो ा नहीं रहा कि कमरे का दरवाजा खुला है और चीता उसका जिगरी दोस्त है।

जो किसी भी समय आ सकता है...

सब कुछ भूल कर बबलू गुंजा को अपनी बाहों में भर लेता है।

चीता को आने में बहुत देर तो नहीं हुई पर अपनी पहली मोहब्बत में देर हो चुका था। इतने में ही चीता साइकिल खड़ी कर पसीने में भीगा हुआ, चेहरा धूप में एकदम लाल पर आंखों में चमक लिए सीधे अपने कमरे की तरफ भागता है।

लेकिल चीता जैसे ही कमरे का नजारा देखता है उसके हाथ से गुलदस्ता और चॉकलेट गिर जाता है।

बबलू और गुंजा दोनों को अंतरंग हालत में देखकर चीता बेहो ा होने लगता है।

फिर किसी तरह खुद को संभालता है और बबलू और गुंजा से कहता है...

वाह! मेरे दोस्त क्या सिला दिया है तुमने मेरी दोस्ती का...

सीक्रेट तो मैं देने आया था लेकिन सीक्रेट तो तुम दोनों ने दे दिया।

मेरा सीक्रेट तो सिगरेट बन गया...

तुम जैसा दोस्त पाकर भाायद मैं फिर किसी से दोस्ती न कर पाऊं...

और तुम गुंजा?

तुम लड़कियां ऐसी ही होती हो...

तुम्हें भार्म नहीं आयी...

मेरा ही दोस्त और मेरा ही कमरा?

सरप्राइज मेरा था और मैं ही सरप्राइज हो गया!

भाग जाओ तुम दोनों यहां से...

चीता गुस्से से तिलमिलाता हुआ बोलता है।

फिर कभी सामने न दिखना, नहीं तो भांकर की तरह तीसरी आंख खोलकर भस्म कर दूंगा।

मैं मां की कसम खाता हूं कि आज के बाद फिर कभी न कोई दोस्त होगा न कोई मेरा प्यार।

इस दर्द से चीता का मोह अब गांव से भी ऊब चुका है और घर की माली हालत भी अच्छी नहीं है।

ऐसे हालत में चीता भाहर आने की सोचता है।

चीता अपने पिता से कुछ खासा ताल्लुक नहीं रखता है।

बस अपनी मां को अपनी मन की बात बताता है, मसलन उसे कहां आना है? कहां जाना है? क्या करना है? हर तरह की बातें अपनी मां से कर लेता है।

चीता अपनी मां से...

मां मुझे भाहर जाना है।

गांव में रहकर मेरी जिंदगी बर्बाद हो जाएगी।

मुझे तो राज करना है इसलिए मेरा भाहर जाना बहुत जरूरी है।

मां चीता से कहती है...

बेटा अभी पढ़ लो...

थोड़ा और बड़े हो जाओ...

तुम्हारी उमर ही कितनी है और भाहर जाकर क्या करोगे?

चीता मां से बोलता है...

मां तू फिकर न कर...

तू तो जानती है अपने बेटे के हुनर को...

बस तू मेरे भाहर जाने का इंतजाम कर।

चीता की जिद के आगे मां की एक भी न चली।

मां एक पुराना बक्सा निकालती है और कुछ पैसे का इंतजाम करती है।

बक्से में एक जोड़ी कपड़ा और साथ में बारहवीं तक के कागजात रख देती है और फिर चीता के लिए कुछ खाने–पीने के लिए बनाने चली जाती है।

चीता सुबह होते ही मां से आ ाीर्वाद लेता है और बक्सा उठाकर स्टे ान की तरफ रवाना हो जाता है।

रेलवे स्टे ान पहुंच कर वह लखनऊ

जाने वाली रेलगाड़ी पर सवार हो जाता है।

गाड़ी पूरी खचाखच भरी है मगर चीता का दिमाग खाली है।

क्योंकि पहली बार वह रेलगाड़ी का सफर है और साथ में यह चिंता भी उसे सताए जा रही है कि भाहर में वह किससे मिलेगा और कहां जाएगा?

भाहर उसके लिए पूरी तरह अपरचित है।

कोई खास उसका न तो जानने वाला है न ही कोई भाई–भतीजा है।

यही सोचते हुए चीता का सफर भुरू हो जाता है।

कुछ घंटों बाद गाड़ी चारबाग स्टे ान पर पहुंचती है।

बारि ा और उमस से सारे यात्री गर्मी से परे ाान हैं और गाड़ी से उतरते ही राहत की सांस लेते हैं।

चीता के कदम भी पहली बार राजधानी के लखनऊ स्टे ान पर पड़ते हैं।

लेकिन वह खु ा नहीं है।

क्योंकि उसे यह समझ नहीं आ रहा है कि वह जाए कहां?

भाहर नया है, न कोई परिचित है न कोई रि तेदार।

लगभग तीन से चार घंटे तक चीता उसी बक्से पर बैठ कर यही सोचता रहा लेकिल उसे समझ नहीं आ रहा है कि किधर जाए।

यही सोचते–सोचते चीता को चक्कर आ जाता है और ग ा खा कर गिर जाता है।

चीता को बेहो ा देख कर आस–पास लोगों की भीड़ जुट जाती है।

तभी भीड़ से निकलकर एक आदमी चीता के पास आता है और चेहरे पर पानी की छींटे मारता है।

दरअसल वह युवक चीता के बगल गांव का रहने वाला है।

पानी की छींटों से चीता को हो ा आ जाता है।

सामने उस नौजवान युवक को देखकर पहचान जाता है।

तभी चीता मौके की नजाकत को भांपते हुए तुरंत उस युवक सलामी ठोकता है।

परिचित रमे ा, चीता से पूछता है...

चीता तुम यहां कैसे, कहां से आ रहे हो?

चीता, रमे ा का पैर छूते हुए...

भैया गांव से आ रहा हूं।

बहुत गर्मी थी इसलिए चक्कर आ गया।

लेकिन अब मैं ठीक हूं।

रमे ा, चलो ठीक है स्टे ान से बाहर चलते हैं।

मगर ये बताओ चीता तुम लखनऊ में कहां जाआगे?

चीता, भैया अभी तो कुछ पता नहीं बस यही सोच रहा हूं कि कहां जाऊं ?

रमे ा को चीता पर तरस आ जाता है।

वह चीता को लेकर अपने कमरे पर चले आते हैं।

कमरे पर पहुंच कर दोनों हाथ–मुंह धोते हैं, फिर रमे ा, चीता के लिए खाने का इंतजाम करने चला जाता है।

दोनों खाना खाते हैं।

रमे ा, चीता को आराम करने की बात कहकर काम पर चला जाता है।

उधर चीता का चित्त अभी भाांत नहीं है।

कुछ देर बाद रमे ा जब काम से वापस आता है तो चीता को बेचैन देखकर बोलता है कि चीता, तुमको क्या हुआ?

तुम इतना परे ाान क्यों हो?

चीता, रमे ा से...

क्या बताएं भैया? कानों में सांय–सांय की आवाज आ रही है।

जैसे कब्रिस्तान का सन्नाटा हो।

दिमाग पूरी तरह सुन्न पड़ा है।

रमे ा मुस्कुराते हुए चीता से कहता है कि घबराओ नहीं, सब ठीक हो जाएगा।

तभी चीता के दिमाग में एक आइडिया आता है कि एक–दो दिन लखनऊ में कुछ काम तला ा लेते हैं।

अगर काम नहीं मिला तो कलकत्ता चला जाऊंगा।

वहां कुछ न कुछ जरूर मिल जाएगा।

चीता, एक–दो दिन लखनऊ में अपने हिसाब से सारे रास्ते नाप लेता है।

मगर कुछ काम नहीं बनता।

अब चीता अपना बक्सा उठाता है और रमे ा से विदा लेकर चारबाग रेलवे स्टे ान आ जाता है।

चूंकि अब चीता के पास पैसे भी नहीं बचे है इसलिए वह कलकत्ता जाने वाली गाड़ी पर बिना टिकट ही सवार हो जाता है।

चीता बोलने में माहिर तो है ही साथ में बहुरूपिया भी अच्छा है।

किसी को भी एक पल में अपना बनाने की काबिलियत रखता है।

वह गाड़ी में बैठे यात्रियों में इतना घुल–मिल जाता है कि टिकट न होते हुए भी चीता को बैठने के लिए सीट मिल जाती है।

इसी बीच टीटी भी गाड़ी में आ जाता है।

सबका टिकट चेक करता और चीता से भी टिकट मांगता है।

चीता, टीटी से बड़े अदब से कहता है कि साहब!

एक मिनट मेरी बात सुन लीजिए...

मैं पढ़ा लिखा हूं, झूठ नहीं बोलता।

चोरी नहीं कर रहा हूं, मजबूरी है।

मेरे पास टिकट के पैसे नहीं थे।

मैं काम की तला ा में कलकत्ता जा रहा हूं।

टीटी को अपनी लच्छेदार बातों में फंसाकर चीता मामले को रफादफा कर देता है।

गाड़ी कलकत्ता रेलवे स्टे ान पहुंचती है।

चीता की पूरी रात स्टे ान पर ही कटती है।

सुबह काम की तला ा में चीता निकलता है और पूरी रात तक भटकता ही रहता है।

लेकिन काम नहीं मिलता।

फिर स्टे ान के पास ही झुग्गी में चीता अपना आ ियाना बना लेता है।

वहीं उसे तमाम बच्चे बोतल में बोतल में पानी भर के बेचते हुए नजर आते हैं।

ये देखकर चीता के दिमाग की घंटी बजती है।

वह बिना देर किए बोतल इकठ्ठा करता है और यात्रियों को पानी बेचना भ्ारू कर देता है।

चूंकि इस काम में कोई पूंजी नहीं लगी थी इसलिए चीता के पास कुछ पैसे जमा हो जाते हैं।

कुछ दिन तक चीता इसी काम को करता रहता है।

काम करते हुए चीता को फिर एक आइडिया आता है।

उसके पास बक्सा तो था ही अब कुछ पैसे भी जमा हो गए।

उसने उन पैसों से कुछ साड़ियां खरीदी और फेरी करने लगा।

चीता को बोलने में महारत तो हासिल ही थी इसलिए उसका फेरी का धंधा मुफीद साबित हुआ।

इस काम से वह जल्द ही ठीक–ठाक पैसा कमा लेता है।

पर अभी भी उसके दिमाग में ठहराव नहीं है।

उसका हरकती दिमाग हर घंटे एक नया आइडिया इजात करता है।

एक दिन उसका मन कलकत्ता से भी भर जाता है और अपना बक्सा लेकर कलकत्ता से वापस लखनऊ आ जाता है।

लखनऊ पहुंच कर चीता फिर अपने परिचित रमे ा के घर पहुंचता है।

चीता को अचानक देखकर रमे ा उससे पूछता हैं?

अरे! तुम वापस लौट आए, सब ठीक है ना?

चीता, रमे ा से, भैया कुछ ठीक नहीं है...

बेकार भाहर है कलकत्ता।

अपना लखनऊ ही अच्छा है।

भैया आप ट्यू ान पढ़ाते हैं, मुझे भी कुछ ट्यू ान दिला दीजिए।

मैं भी पढ़ाऊंगा और पढूंगा भी।

रमे ा, चीता को ट्यू ान दिला देता है।

चीता, रमे ा के घर रहकर ट्यू ान पढ़ाने लगता है।

उसके बाद जो समय बचता है, उसमे चीता चौराहे बाजी करता है।

कुछ एक महीना गुजरता है...

ट्यू ान से पैसे भी हाथ में आने लगते हैं।

तभी उसके दिमाग में फिर खुजली होती है।

अब वह एक कदम आगे की सोचने लगता है।

ट्यू ान से इकठ्ठा हुए पैसों से चीता अलग किराए पर एक कमरा लेता है और उसमे वह कोचिंग भाुरू कर देता है।

जहां पर वह छह से आठवीं तक के बच्चों को खुद पढ़ाता है।

चूंकि यह कमरा चौराहे से बिल्कुल सटा हुआ है जिसके चलते कालोनी का हर आदमी चीता की कोचिंग के पास से गुजरता है।

किसी को रोज का सामान खरीदना हो, चाहे किस को अपने पालतू कुत्ते को घुमाना हो, हर किसी को चीता की कोचिंग के सामने से ही गुजरना होता है।

चीता इस लोके ान का फायदा उठाता है।

जितने भी आने–जाने वाले लोग हैं सुबह– ााम उनको सलामी ठोकता है और साथ में हाल–चाल लेता है।

इसमें भी बुजुर्गों से चीता खास बातचीत करता है और उनको बुढ़ापे में जवानी की कहानी सुनाता है।

अब चीता की कोचिंग चल निकली है।

कमाई भी पहले से भी अच्छी होने लगी है।

कोचिंग को आठवीं से बढ़ाकर दसवीं तक कर देता है।

मजे की बात तो यह है कि जिस परिचित रमे ा के यहां उसने अपना डेरा जमाया था अब उन्हें भी अपनी कोचिंग में पढ़ाने के लिए रख लेता है।

चीता की जेब में पैसा आने लगा तो चौराहेबाजी भी उसकी बढ़ गयी।

उसे अब कोई टें ान भी नहीं हैं।

चीता की एक भाम कोचिंग के दौरान एक रिटायर्ड ऑफिसर से मुलाकात हो जाती है। जिसका चौराहे के बगल में ही दो मंजिला मकान है जहां पर वह अकेले ही रहते हैं।

धीरे–धीरे चीता की उनसे बातचीत भुरू हो जाती है।

चीता की हाजिर जवाबी और बेखौफ अंदाज से अफसर बहुत प्रभावित होते हैं।

अफसर, चीता से कहते हैं...

आप बहुत मेहनती लड़के हो और दिलचस्प भी हो।

सबसे अच्छी बात यह है कि तुम कुछ बड़ा करना चाहते हो...

मुझे ऐसे लोग बहुत पसंद हैं।

अगर तुम चाहो तो तुम मेरे मकान में अपनी कोचिंग चला सकते हो।

मेरे मकान का नीचे का पोर्सन खाली है।

अफसर, चीता को कोचिंग चलाने का ऑफर दे देते हैं।

अब चीता की जिंदगी में भी कुछ बड़ा होने वाला है।

चीता भी मौके को भांपते हुए अफसर के चरण पकड़ता है...

और उनसे कहता है कि सर!...

आपका मुझ पर बड़ा उपकार होगा।

मैं उम्र भर आपका आभारी रहूंगा

लेकिन एक मु कल है मेरे पास, उतने पैसे नहीं हैं कि मैं आपको किराया दे सकूं।

अफसर, चीता से...

तुम मेरे बेटे जैसे हो, चिंता मत करो!...

जब कमाने लग जाना तब पैसे दे देना।

इधर मकान का एग्रीमेंट होता है, उधर चीता की जिंदगी भी नए मोड़ पर आ जाती है।

चीता बिना किसी देरी के कोचिंग के लिए एक नया बोर्ड बनवाता है और अपनी कोचिंग को बढ़ाकर बीएससी तक कर देता है। तीन से चार टीचर कोचिंग में पढ़ाने के लिए रखता है और खुद संचालक बन जाता है।

कुछ ही महीनों में कोचिंग से पर्याप्त पैसा आना भुरू हो जाता है।

अब कुछ पैसे चीता अपने घर भी भेजने लगता है।

अब चीता की जिंदगी में कुछ ठहराव आ गया है।

चीता अब अपनी लाइफ स्टाइल में क्रांतिकारी बदलाव लाता है।

इसी बीच मोहन और पिंटू नाम के दो लड़कों की मुलाकात चीता से होती है।

दोनों चीता के प्रभाव में आ जाते हैं और उसे अपना गुरू मान लेते हैं।

चीता इन दोनों लड़कों को अपने मकान में ही रहने के लिए कहता हैं।

मोहन और पिंटू चीता के मकान में रहने आ जाते हैं।

सुबह होती है, पैसे जेब में रहते हैं।

ऐसे में बाहर खाने का प्लान बनता है और भॉपिंग भी तो करनी है चीता को।

चीता, मोहन और पिंटू से कहता है...

तुम दोनों जल्दी से तैयार हो जाओ।

आज हम लोग बाहर खाना खाएंगे और भॉपिंग भी करेंगे।

पिंटू तुम बाहर से कोई रिक ा ले आओ, आज पूरा भाहर घूमना है।

रिक ोवाला आता है...

चीता रिक ोवाले को पूरे दिन के लिए बुक करता है।

फिर तीनों रिक ो पर बैठकर हजरतगंज की ओर निकल पड़ते हैं।

एक किनारे पर मोहन और दूसरे किनारे पर पिंटू और बीच में चीता बैठता है।

रिक ोवाला हजरतगंज पहुंच कर एक मॉल के पास रिक ा रोक देता है।

मॉल पहुंच कर चीता एक जोड़ी जींस, भार्ट और कुछ कपड़े खरीदता है।

तभी मोहन, चीता से कहता है...

भैया, ये भार्ट देखिए...

आप पर बहुत अच्छी लगेगी।

चीता, नहीं यार ये नहीं...

मुझको अलग दिखना है।

ये तो सभी लोगों की पसंद है।

चीता, पिंटू और मोहन के साथ पूरा दिन भाहर की खाक छानता है और भााम को तीनों खाना खाकर वापस घर पहुंचते हैं।

घर पहुंच कर चीता रिक ोवाले को किराया देने के साथ ही कुछ पैसे अलग से देता है। इस तरह चीता का संडे बीतता है।

चीता अगली सुबह जल्दी उठता है।

वह मकान के बगल में रह रहे अपने एक दोस्त दीपू के कमरे में जाता है...

उसे जगा कर बाहर चाय की दुकान पर ले जाता है।

चाय पीते–पीते चीता अपने मतलब की बात भाुरू कर देता है।

चीता, दीपू से, यार! ये बताओ कि सर्दी आ रही है...

काली पैंट, काली भार्ट, काला जूता और काला च मा पहन कर निकला जाए तो कैसा रहेगा?

दीपू, अरे! भाई क्या पसंद है...

एकदम अलग दिखोगे।

कसम से मॉडल टाइप लगोगे।

पर भाई अगर उस पर लाल टाई भी लग जाए तो...

चीता तपाक से बोलता है, अरे इसमें क्या दिक्कत है आज ही खरीद लेंगे।

दीपू, चीता के रंगीन मिजाज को जानता था इसलिए मजा लेता है।

चीता इसी टाइप का प्रयोग अपने कपड़ों पर करता है।

हेयर स्टाइल में भी चीता नए–नए आइडिया लेकर नाई की दुकान पर जाता और उससे कहता है कि ऐसे काटो–वैसे काटो।

चीता, नाई को इतना उलझा देता है कि नाई अपना हुनर भूल जाता है।

कभी छोटे बाल, कभी लंबे बाल तो कभी आर्मी स्टाइल में अपना रूप बदलता रहता है। इसी बीच चीता अपने नए लुक की खातिर अपना सिर मुंडवा लेता है।

अगले दिन चौराहे पर चीता की दीपू से मुलाकात होती है।

दीपू आ चर्य से देखते हुए चीता से पूछता है!...

भाई क्या हुआ?

ये क्या कर डाला है...

कैसे लग रहे हो?

क्योंकि चीता उस्ताद आदमी था तो मौके को देखते हुए बोला...

अरे! ये नया लुक है... विदे ाी टाइप।

बड़े बालों में तो तमाम लोग घूम रहे हैं...

मुझे तो लोगों से अलग दिखना है।

दीपू बोलता है...

आप पहले हीरो टाइप लग रहे थे, एकदम स्मार्ट।

इस लुक में तो बोगस लग रहे हो।

अब चीता से रहा नहीं गया।

उसने असली बात बक दी।

चीता, दीपू के कान में धीरे से बोलता है...

भाई बाल बहुत झड़ रहे थे ।

बाल रहेंगे तो स्टाइल रहेगी ना।

अब...आगे थोड़ी सी चर्चा चीता की दिनचर्या पर करते हैं...

चीता रोज सुबह चार बजे उठता है,

स्टेडियम में दौड़ने जाता है,

सात बजे वापस कमरे में आता है और फिर तैयार होकर चौराहे पर पहुंचता है।

पर वह सुबह की चाय नहीं पीता है।

चाय की जगह एक या दो केले वहीं ठेले पर खड़े–खड़े गटक जाता है।

फिर दूध का एक पैकेट कमरे पर लाता है और उसे गरम कर खींच देता है।

इस दौरान एक दिन चीता का छोटा भाई लखनऊ

आ जाता है।

तो खाना वगैरह वही बनाता है।

पिंटू और मोहन कुछ दिनों के लिए अपने घर चले जाते हैं।

चीता के खाने का टाइम कोई फिक्स नहीं रहता।

उसके मूड की बात है कभी बारह बजे तो कभी तीन बजे, कभी कभार तो खाता ही नहीं।

भाम चार बजे से बच्चों का आना भुरू हो जाता है।

उससे पहले चीता बन–ठन कर तैयार हो जाता है।

दिनभर में कम से कम तीन से चार बार चीता सरसों के तेल से बॉडी मसाज करता है। जो भी उस वक्त वहां मौजूद रहता है उससे चीता अपनी फोटो खिंचवाता है और अपनी तारीफ सुनता है।

कभी काला च मा तो कभी हरा च मा तो कभी भार्टलेस फोटो कोचिंग भुरू होने के पहले उनका करतब है।

दोपहर के समय दीपू भी मौज मस्ती लेने के लिए चीता के मकान पर अक्सर आता रहता है।

एक दिन दीपू, चीता के मकान पर आता है...

चीता पूरे जो ा में दीपू का स्वागत करता है।

आओ भाई, क्या हाल है?

दीपू, सब मस्त है...अपनी सुनाओ!

चीता ठीक है यार!

दीपू, चीता के बेड पर पड़ी होम्योपैथ की दवा देखकर पूछता है...

अरे! यार ये कौन सी गोली खा रहे हो?

चीता अरे यार, ये गोली नहीं है, होम्योपैथ की दवा है, गोरेपन की।

चेहरा थोड़ा सांवला हो गया है इसको गोरा करना है।

डॉक्टर के पास गए थे उसने यही दवा दी है...

दो गोली सुबह और दो गोली भाम को खाना है।

दीपू, अच्छा है भाई गोरे हो जाओ!

चीता , हां मैं कभी–कभार दो गोली की जगह चार पेल जाता हूं...

कौन सी ये दवा नुकसान करने वाली है।

इस बीच यार दोस्त आते रहते हैं।

चीता जब भी कमरे से बाहर आता है...

पहला सवाल, भाई स्मार्ट लग रहा हूं ना...

बॉडी भोप सही है ना?

सभी दोस्त हां में हां मिलाते हैं और फिर बाद में पीठ–पीछे हंसते हैं।

चीता बॉलीवुड के एक अभिनेता के वि ोश फैन है और उन्हीं की तरह की दिखना भी चाहते हैं।

चीता, दीपू से पूछते हैं, भाई मैं लगता हूं ना एकदम हीरो?

दीपू, हां बिल्कुल भाई...

पर आपके गाल थोड़े फूले से हैं...

बाकी कदकाठी तो काम चलाऊं

है।

आपका चेहरा बॉलीवुड के आपके चहेते हीरो से मैच नहीं करता।

हमारे चीता यहां भी हता ा नहीं होते।

चीता अरे! भाई दिक्कत क्या है?...

पैसा हो तो सब हो जाता है...

फूले गालों की सर्जरी करा लेंगे।

चीता दिनभर में चार–पांच बार मोबाइल से फोटो भाूट करवाते हैं और कहते हैं कि भााम को इसका प्रिंट निकलवाना है, ये फोटो मस्त आयी है।

चूंकि चीता यंग हैं और मॉडल भी है।

पूरा हीरो टाइप लौंड़ा है तो इलाके की सभी लड़कियां चीता की दीवानी हैं।

ऐसा चीता बताता है।

जबकि हकीकत यह है कि चीता ने कई जगह टेंडर डाला पर हर जगह मामला एक तरफा ही रहा।

समय चीता के अनुकूल था।

पैसा कोचिंग से इफराद आ रहा था।

इस टाइम चीता बस एक ही गाना गाता था...

जीने के हैं चार दिन, एक बार जो आए, जवानी फिर न आए।

पैसा बरस रहा था...

लखनऊ जैसे भाहर में ऐ ाो आराम चल रहा था।

ऐसे में चीता के पास अपने सपने सच करने का बेहतर समय था।

अचानक एक सुबह चीता बैग तैयार करता है और चल निकला दिल्ली मॉडलिंग के लिए।

चीता की माली हालत अब रईसों जैसी हो चुकी है तो उसके पैर मंगल ग्रह पर पड़ने को आतुर हैं।

चीता दिल्ली पहुंचता है।

जहां उसकी मुलाकात एक प्रेमा नाम की एक मॉडल से होती है।

प्रेमा बला की खूबसूरत है...

नयन नख्शा कटीलें है और चाल में भी एक अलग सी अदा है।

प्रेमा के चेहरे पर ऐसी मुस्कान तैर रही है जैसे सुबह ओस की बूंदे पत्तों पर चांदनी बिखेर रही हों।

चीता, प्रेमा को देखते ही उस पर लट्टू हो जाता है।

उसका भाातिर दिमाग भी प्रेमा का दिवाना हो जाता है।

दिल्ली के प्रेमनगर में चीता वन बीएचके मकान किराय पर लेता है।

प्रेमा को देखते ही चीता ने पूरा प्लान बना लिया है।

उसको लगा है कि उसके सपनों की रानी प्रेमा ही है।

चीता मन ही मन में ये मान चुका है कि उसको प्रेमा से खूबसूरत लड़की कोई और नहीं मिलेगी।

प्रेमा का मिजाज आमतौर पर थोड़ा सा अलग है।

मतलब और लड़कियों से प्रेमा का अंदाज जुदा है।

खैर अपने चीता का भी तो नेचर थोड़ा ज्यादा हटके है।

उधर चीता का गठीला बदन और छरहरी काया देख कर प्रेमा भी चीता में दिलचस्पी लेने लगती है।

उसको भी चीता का हरफनमौला मिजाज पसंद आने लगता है।

इस बीच चीता, मोहन और पिंटू को फोन करता है और उनसे कहता है...

उसको उसके सपनों की रानी मिल गयी है।

जिसकी उसे सालों से तला ा थी।

लड़की एक दम सुपर मॉडल है।

मोहन और पिंटू फोन पर चीता से बोलते हैं...

भैया भौजाई को कोई फोटो भेजिए।

चीता, मोहन और पिंटू से फोन...

अरे यार! अभी बात तो फाइनल हो जाने दो

तुम लोगों को बुलाएंगे तब सामने से देख लेना।

चलो! अब फोन रखो फिर बात होगी।

अब चीता का एक ही काम है, प्रेमा को रिझाने का।

चीता के तरक ा के जितने भी तीर हैं, वह सब प्रेमा पर छोड़ देता है।

चीता प्रेमा को खूब उंचे–उंचे ख्वाब दिखाता और कहता है कि हम दोनों मुम्बई चलेंगे और फिल्मों में काम करेंगे।

चीता की ये लच्छेदार बातें प्रेमा से कुछ दिनों तक ऐसे ही चलती रहती हैं।

फिर एक भााम चीता, प्रेमा को फोन करता है और उसको डिनर के लिए बुलाता है।

प्रेमा एक–दो बार ना करती है लेकिन फिर वो चीता के साथ जाने को तैयार हो जाती है। इधर चीता काला च मा, काली जींस और काली भार्ट पहनकर तैयार होता है।

जब तक प्रेमा आती है तब तक चीता आइने के सामने पचासा मार चुका होता है।

प्रेमा आती है...

चीता फुल टाइम के लिए आटो बुक करता है।

चीता आटो वाले से कहता है, तुमको पैसा पूरा देंगे और खाना भी खिलाएंगे लेकिन कोई जल्दबाजी नहीं करनी है।

आटो वाला ठीक है सर! मैं फुल टाइम आपके साथ हूं।

प्रेमा और चीता आटो में बैठते हैं।

भााम रात की तरफ की बढ़ रही है।

रोड़ और रेस्त्रां की लाईटें जल चुकी हैं।

पूरा भाहर रो ानी से जगमग है।

इधर चीता भी अपने दिल में प्रेमा के नाम का दिया जलाए बैठा है।

चीता, प्रेमा से पूछता है, आप बताओं कहां चले?

प्रेमा, चीता से बेझिझक बोलती है...

जहां आपकी मर्जी वहां ले चलिए।

आज की रात तो मैंने आपके नाम कर दी है।

प्रेमा खूबसूरत है लेकिन भार्माती नहीं है।

प्रेमा की इन्हीं अदाओं पर चीता फिदा है।

चीता, प्रेमा से, ओके मैडम!...

चलो फिर सितारों के बीच ले चलते हैं।

चीता, प्रेमा से पूछता है कि कुछ बियर या वोडका चलेगी?

प्रेमा मुस्कुराते हुए कहती है कि मेरा तो कुछ भी चलेगा।

चीता, प्रेमा को लेकर एक बार में जाता है।

वहां दोनों अपने पसंद की भाराब पीते हैं और डांस करते हैं।

फिर वहां से निकल कर चीता और प्रेमा बाहर आते हैं और आटो वाले से कहते हैं कि भाहर के किसी अच्छे रेस्टोरेंट ले चलो...

जहां सबसे अच्छा खाना मिलता हो।

रेस्टोरेंट में पहुंच कर दोनों खाना खाते हैं।

आधी रात ढल चुकी है।

प्रेमा, चीता से कहती है...

अब मुझे घर जाना है।

लेकिन चीता तो अभी भी प्रेमा की न ाीली आंखों में गोते लगाना चाह रहा है।

प्रेमा, चीता से फिर उसे घर छोड़ने की बात कहती है और रेस्टोरेंट से बाहर आकर आटो में बैठ जाती है।

चीता भी रेस्टोरेंट का बिल अदा करके बाहर आकर आटो में बैठ जाता है।

चीता आटो में बैठते ही आटो वाले से कहता है...

भैया कोई रोमांटिक सा गाना चलाइए।

आटो वाला भी चीता को भांप गया।

उसने भी एक खूबसूरत सा गाना बजाया और चल पड़ा।

कुछ दूर चलने के बाद...

प्रेमा आटो वाले को आवाज देती है...

भैया आगे वाले चौराहे पर आटो रोक दीजिएगा।

आटो वाला चौराहे पर आटो रोकता है।

चीता, प्रेमा से कहता है...

चलो घर तक छोड़ देता हूं।

चौराहे पर क्यों उतर रही हो?

प्रेमा कहती है...

नहीं मैं चली जाउंगी, मुझे यहीं पर उतार दो।

आधी रात से ज्यादा का वक्त बीत चुका है।

चीता, प्रेमा को चौराहे पर उतार कर वापस आपने कमरे की तरफ चल पड़ता है।

क्योंकि चीता भी न ो में धुत है तो आटो वाले का सहारा लेकर कमरे तक किसी तरह से पहुंचता है।

चीता आटो वाले को पैसा देता और उसका फोन नंबर लेकर उससे कहता है कि फिर से तुम्हारी सेवा लूंगा।

अगले दिन चीता मां को फोन करता है।

मां कैसी हो, क्या हाल हैं?

मां, यहां सब ठीक है बेटा...

तुम बताओ क्या कर रहे हो और कैसे हो?

चीता, मैं तो मस्त हूं मां...

तुम्हारे लिए एक खु ाखबरी है।

तुम्हारे मॉडल बेटे ने तुम्हारे लिए एक खूबसूरत सी मॉडल बहू ढूंढ ली है।

जल्द ही बात आगे बढ़ाऊंगा फिर बताऊंगा मां।

चीता, अच्छा मां अब मैं फोन रखता हूं, मोहन का फोन आ रहा है।

चीता जैसे ही मोहन का फोन उठाता है...

उधर से बस यही आवाज चीता के कानों में पड़ती है...

क्या भैया, कहां हो?

यहां कुछ अच्छा नहीं लग रहा, आप कब तक आएंगे?

चीता गहरी सांस लेते हुए बोलता है...

अरे यार मोहन!...

परे ाान न हो, मैं जल्द ही आऊंगा।

अभी यहां एक बड़े मि ान पर हूं।

चीता थोड़ा सोचते हुए मोहन से बोलता है...

एक काम करो मोहन, तुम और पिंटू तब तक यहां दिल्ली ही आ आओ।

कुछ दिन यहीं मौज करते हैं।

मोहन, हां भैया वैसे भी यहां मन नहीं लग रहा है।

चीता, चलो ठीक है...

मैं पैसे भेज रहा हूं, तुम लोग जल्दी से बस पकड़ कर यहां आ जाओ।

यहां रहने का मस्त इंतजाम किया है।

मोहन और पिंटू दोनों बिना देर किए अपना बैग पैक करते हैं और दिल्ली जाने के लिए निकल पड़ते हैं।

क्योंकि दोनों नल्ले हैं तो चीता की हां में हां मिलाए रहते हैं।

देर रात मोहन और पिंटे दिल्ली बस स्टाप पर पहुंच जाते हैं।

पिंटू, चीता को फोन करता है और बताता है कि भैया हम दिल्ली आ गए हैं।

अब कहां आना है?

चीता, पिंटू को अपने कमरे का पता भेजता है।

मोहन और पिंटू आटो किराए पर लेकर सीधे चीता के पास चल पड़ते हैं।

एक घंटे बाद मोहन और पिंटू चीता के सामने होते हैं।

चीता, मोहन और पिंटू को देखते ही बड़े तगड़े अंदाज में दोनों का स्वागत करता है।

चीता, मोहन और पिंटू से...

आओ मेरे दोस्त, तुम लोगों के बिना मेरा मन नहीं लगा रहा था।

अच्छा हुआ तुम लोग यहां आ गए।

अब कुछ दिन यहीं मौज करेंगे।

तभी पिंटू तपाक से चीता से कहता है...

भैया सब तो ठीक है लेकिन भाभी की फोटो तो दिखा दो...

चीता, सबर करो!...

कल बुलाया है तो सामने से ही देख लेना।

वैसे बस इतना जान लो कि तुम्हारी भौजाई किसी बॉलीवुड हसीना से कम नहीं हैं। एकदम जीरो फिगर और मेरी तरह ही बेबाक अंदाज।

चीता अब प्रेमा को लेकर जल्दी में है।

वह उसे ज्यादा टाइम देना नहीं चाहता।

वैसे भी चीता को प्यार और दोस्ती में कोई भरोसा है नहीं।

चीता का भाातिर दिमाग कहता है कि प्रेमा के मामले में अब देर नहीं करनी।

जल्द से जल्द मामले को रफा–दफा करना ही पड़ेगा।

अगली सुबह...

चीता, मोहन और पिंटू ना ता करने के बाद बाहर डिनर का प्लान बनाते हैं।

चीता प्लान सेट करता है...

मैं प्रेमा को बुलाऊंगा।

प्रेमा और मैं आटो में एक साथ जाएंगे।

दूसरी आटो से तुम दोनों मेरे पीछे–पीछे आ जाना।

प्लान के मुताबिक चीता, प्रेमा को फोन करता है और उससे मिलने की बात करता है। प्रेमा भी चीता को मना नहीं कर पाती।

वह उससे मिलने के लिए आ जाती है।

चीता और प्रेमा एक आटो में बैठ जाते हैं जबकि मोहन और पिंटू दूसरे आटो में चीता के पीछे–पीछे चल देते हैं।

चीता, प्रेमा को लेकर एक रेस्टोरेंट पहुंचता है।

पीछे से मोहन और पिंटू का भी आटो रेस्टोरेंट के बाहर रूकता है।

वह दोनों भी रेस्टोरेंट के अंदर पहुंच जाते हैं।

अंदर पहुंचते ही मोहन और पिंटू की नजर जैसे ही प्रेमा पर पड़ती है...

उनकी आंखे फटी की फटी रह जाती है।

प्रेमा बला की खूबसूरत तो थी ही, उस पर छरहरी काया जो किसी को भी मंत्रमुग्ध कर दे।

पिंटू, मोहन से कहता है कि भौजाई तो वाकई जीरो साइज हैं।

एकदम बॉलीवुड हीरोइन लग रही हैं।

पर कुछ ज्यादा ही हट के हैं।

मोहन, पिंटू से कहता है...

मुझे तो सब ठीक लगा लेकिन उनके चलने का तरीका खटक रहा है।

भौजाई मुझे कुछ अलबेली सी लग रही हैं।

खैर भैया भी तो अपने अलबेले हैं, एकदम हवाबाज टाइप के।

मोहन मसखरे अंदाज में पिंटू से बोलता है।

पिंटू हंसते हुए, हां भाई ठीक कह रहे हो।

उधर चीता प्रेमा के साथ डिनर करता है और प्रेमा को घर छोड़ने के लिए आटो की तरफ बढ़ता है।

मोहन और पिंटू भी जल्दी से अपना डिनर समेटते हैं और चीता के पीछे चल देते हैं।

प्रेमा आटो वाले से फिर उसी चौराहे पर आटो रोकने को कहती है।

चीता इस बार भी चाह कर प्रेमा का घर नहीं देख पाता।

अब इस बात को चीता का भाातिर दिमाग हजम नहीं कर पा रहा है।

चीता, प्रेमा का घर देखने का फैसला करता है, वह भी हर हाल में।

इतने में पीछे से पिंटू और मोहन भी पहुंच जाते हैं।

चीता, पिंटू और मोहन से पूछता है...

भाई कैसी लगी भौजाई?

मोहन और पिंटू फूहड़ अंदाज में बोलते हैं...

एकदम टंच।

जैसे आप हैं, वैसे ही भौजी।

जोड़ का तोड़ है एकदम।

लेकिन यह बात सुनकर भी चीता इस बार खु ा नहीं हुआ।

आम तौर पर चीता अपनी तारीफ सुनना बहुत पसंद करता है।

क्योंकि चीता का दिमाग अभी कहीं और चल रहा है।

इसी समय चीता के भाातिर दिमाग में एक नया प्लान सूझता है।

अगली सुबह चीता मोहन और पिंटू को मूवी का टिकट देकर बाहर भेज देता है।

अब चीता कमरे पर अकेला है।

ऐसे में अपने प्लान के मुताबिक वह प्रेमा को फोन करता है...

और कहता है कि उसकी तबियत बहुत खराब है।

मन में बहुत ही बेचैनी हो रही है, अगर हो सके तो तुम प्लीज आ जाओ!

प्रेमा, चीता की बातों में आ जाती है।

वह भी जल्दी से तैयार होकर चीता के कमरे पर पहुंच जाती है।

यहां पहुंचते ही वह देखती है कि चीता एकदम ठीक है।

यह देखकर प्रेमा, चीता के गलत इरादे भांप जाती है।

खैर प्रेमा कमरे के अंदर एक सोफे पर बैठ जाती है।

चीता बड़े अदब से चाय–ना ता कराता है।

फिर भाराब लेकर आ जाता है।

पर आज प्रेमा भाराब पीने के मूड में नहीं है।

चीता रोमांटिक अंदाज में प्रेमा से पूछता है...

क्या हुआ डार्लिंग?...

आज तुम्हारा मूड क्यों ऑफ है?

तुम्हें यहां आकर अच्छा नहीं लगा क्या?

प्रेमा, चीता से कहती है...

नहीं ऐसी कोई बात नहीं लेकिन तुमने मुझसे झूठ क्यों बोला कि तुम्हारी तबियत खराब है?

चीता, प्रेमा को बाहों में भरते हुए...

अरे डार्लिंग!...

प्यार में ये सब होता है।

इ क में झूठ–फरेब सब जायज होता है।

प्रेमा को चीता की ये बातें पसंद नहीं आती और न ही उसकी हरकत।

चीता, प्रेमा के लिए पैग बनाता है लेकिन प्रेमा पीने से मना कर देती है।

चीता, प्रेमा से...

मेरी जान मुझसे नाराज हो!

मैं तुम्हारे लिए ही दिल्ली में रूका हूं और तुम ना तो मेरे प्यार को समझ रही हो, ना ही मुझे।

मेरा तरीका गलत हो सकता है लेकिन मैं नहीं।

चीता, प्रेमा पर इमो ानल दबाव बनाता है।

प्रेमा न चाहते हुए भी एक पैग भाराब पी लेती है।

इधर चीता अपने रोमांस के फुल फार्म में है।

वह पैग पर पैग निपटाता चला जा रहा है।

चीता के इरादे अब प्रेमा को लेकर ठीक नहीं है।

वह प्रेमा के साथ हर कीमत पर हमबिस्तर होना चाहता है।

मगर प्रेमा किसी तरह से चीता से बच कर उसके घर से निकल जाती है।

चीता न ो में धुत है।

प्रेमा का ऐसे चले जाने को लेकर चीता उदास हो जाता है।

इसी बीच चीता, मोहन को फोन करता है और उसे तुरंत वापस घर आने को कहता है।

मोहन और पिंटू फोन पर चीता से कहते हैं...

भैया अभी मूवी खत्म नहीं हुई है।

कुछ देर बाद आ जाएंगे।

चीता गुस्से में होकर मोहन और पिंटू से कहता है कि अरे यार!...

मैं बोल रहा हूं ना कि फौरन मूवी छोड़कर वापस आओ।

इधर तुम्हारा भाई खुद मूवी बन गया है।

मोहन और पिंटू मूवी छोड़कर वापस कमरे पर आते हैं।

इधर चीता भाराब की पूरी बोतल खाली कर देता है।

वह न ो में धुत है।

मोहन और पिंटू से रो–रो कर अपनी आप बीती बताता है।

चीता, मोहन और पिंटू से कहता है...

तुम्हारी भौजाई आज आयी थी...

मगर वह मेरे इरादों पर लात मार कर चली गयी।

यार मुझे समझ नहीं आ रहा है कि मैं क्या करूं?

आखिर क्या कमी है मुझमें?

पिंटू और मोहन, चीता से कहते हैं...

नहीं भैया आप में कोई कमी नहीं हैं।

आप जैसा गबरू जवान, मॉडल टाइप लड़का कहां मिलेगा?

पिंटू, मोहन से कहता है...

भाई मुझे तो दाल में कुछ काला लग रहा है।

पिंटू की बात सुनकर चीता घड़याली आंसू बहाते हुए दोनों से कहता है...

अगर प्रेमा मुझे न मिली तो मैं दुनिया को आग लगा दूंगा या खुद ही जल कर राख हो जाऊंगा।

इस बातचीत के दौरान चीता के भाातिर दिमाग में एक और आइडिया आता है।

अगली सुबह चीता प्रेमा को फिर फोन करता है।

पहली बार में प्रेमा चीता का फोन नहीं उठाती।

लेकिन लगातार चीता, प्रेमा को फोन करता है।

प्रेमा फोन उठाती है, हैलो! बोलती है...

इधर से चीता प्रेमा से कहता है कि प्रेमा मेरा फोन मत काटना, प्लीज!...

मेरी बात सुन लो...

मैं कल के लिए माफी मांगता हूं।

इस दुनिया में तुम ही तो हो मेरी, मैं तुमको रानी बनाकर रखूंगा।

चीता ऐसे ढेरों फिल्मी डॉयलाग प्रेमा पर चिपकाता है।

चीता की इन बातों से आजिज आकर, प्रेमा चीता से कहती है...

सुनो मेरी दुनिया तुमसे अलग है।

तुम समझ नहीं रहे हो कि मैं क्या कहना चाह रही हूं?

मैं और तुम एक दम अलग–अलग हैं।

मगर प्रेमा की इन बातों का चीता पर कोई असर नहीं पड़ता है।

वह तो बस प्रेमा के भारीर को देखकर हवस में अंधा हो गया है।

आखिर में चीता के बहुत गिड़गिड़ाने पर प्रेमा भाम को उससे मिलने के लिए तैयार हो जाती है।

मगर कमरे पर आने से मना कर देती हैं।

चीता को अब प्रेमा की बात समझ में आ गयी है कि उसका इरादा कुछ और है।

चीता सुबह से ही भातरंज की मोहरे बिछाना भुरू कर देता है।

इस बार चीता, मोहन और पिंटू को सेट करता है और कहता है...

आज तुम दोनों को प्रेमा का पीछा करना।

उसके घर का पता लगाना है कि वह कहां रहती है?

मोहन और पिंटू चीता का प्लान समझ गए हैं।

भााम होते ही चीता अपने चेले, आटो वाले को बुलाता है।

उस आटो वाले को मोहन और पिंटू के हवाले कर देता है और आटो वाले से कहता है कि ये लोग जहां भी जाना चाहें बिना सवाल किए चले जाना।

खुद चीता दूसरी आटो बुलाता है और प्रेमा को फोन करता है।

प्रेमा, चीता के पास आती है।

चीता, प्रेमा को आटो में बैठाकर मॉल में लेकर जाता है।

वहां दिल खोल कर भॉपिंग कराता है।

प्रेमा ना चाहते हुए भी मना नहीं कर पा रही थी।

भॉपिंग के बाद चीता, प्रेमा के साथ एक बार में जाता है।

जहां दोनों साथ में भाराब पीते हैं।

मोहन और पिंटू भी इसी बीच पीछे से बार में आ जाते हैं।

मौके की नजाकत को देखते हुए वो दोनों भी जमकर जाम छलकाते हैं।

न ो में धुत चीता, प्रेमा से कहता है...

तुम इस रि ते को आगे क्यों नहीं बढ़ा रही हो?

प्रेमा, चीता से...

तुम समझ क्यों नहीं रहे हो?

तुम और मैं एकदम अलग हैं।

हमारी दुनिया भी एक दम अलग है।

भाायद प्रेमा चीता से बहुत कुछ कहना चाहती थी।

लेकिन तभी बार में कुछ लोगों के बीच किसी बात को लेकर झगड़ा भाुरू हो जाता है। इस भाोर– ाराबे के बीच प्रेमा, चीता से अपनी बात पूरी नहीं कर पाती और बार से बाहर आ जाती है।

चीता, प्रेमा का हाथ अपने हाथों में लिए हुए बाहर आटो तक आता है।

आटो में बैठकर चीता हर बार की तरह प्रेमा को चौराहे पर छोड़ता हैं।

उधर प्लान के हिसाब से मोहन और पिंटू प्रेमा का पीछा भाुरू कर देते हैं।

प्रेमा का आटो हमे ाा की तरह उसी चौराहे पर आकर रूकता है।

प्रेमा आटो से उतर कर अपने घर की तरफ चल देती है।

पिंटू और मोहन भी आटो से उतर कर प्रेमा के पीछे लग जाते हैं।

कुछ टेड़ी–मेढ़ी गलियों में कुछ दूर जाकर पिंटू और मोहन अचानक ठहर जाते हैं।

प्रेमा हिजड़ों के बीच पहुंचती है और उनको देखकर उन्हीं की तरह ताली बजाकर जोर से ठहाके मार कर हंसती है।

यह नजारा देखकर मोहन और पिंटू का न ाा काफूर हो जाता है।

दोनों उल्टे पैर भाग कर चीता के मकान पर पहुंचते हैं।

वहां पहुंच कर मोहन और पिंटू, चीता को प्रेमा की सारी बातें बताते हैं।

अपनी सपनों की रानी प्रेमा को हिजड़ा जानकर चीता कुत्तों की तरह भौं–भौं कर रोने लगता है।

चीता इधर–उधर भागता है।

कभी वह खुद पर हंसता है तो कभी भगवान को कोसता है।

आसमान की तरफ देखकर चिल्लाता है कि भगवान ने उसके नसीब में प्यार नहीं लिखा है।

चीता बहरूपिया है।

वह अगली ही सुबह पिंटू और मोहन के साथ वापस अपने भाहर आने की तैयारी करता है। साथ ही चीता दोनों को इस बात की कसम भी देता है कि प्रेमा की बात कोई और ना जाने।

ये बात यहीं दिल्ली में ही दफन हो जाए।

चीता, मोहन और पिंटू अपने भाहर के लिए रवाना हो जाते हैं।

रास्ते में चीता की मां का फोन आता है।

वह चीता से पूछती है...

बेटा मेरी मॉडल बहू का क्या हाल है?

मां की ये बात सुनकर, चीता थोड़े गुस्से में आ जाता है।

लेकिन खुद को संभालता है और मां से कहता है...

मां, तुम्हारी बहू किसी के साथ भाग गयी है।

तुम्हारे बेटे को फिर धोखा मिला है मां...

इतना कहकर चीता फोन काट देता है।

इधर चीता वापस अपने भाहर आकर फिर से उसी पुरानी लाइफ स्टाइल में जीना भाुरू कर देता है।

इसी बीच चीता की भाादी के लिए घर से एक रि ता आता है।

चीता की मां रि ते के सिलसिले में उसे फोन करती है।

चीता, मां से...

तुम कहां भाादी के चक्कर में मुझे डाल रही हो?

तुम तो अपने बेटे को जानती हो एकदम हीरो टाइप पर्सनैलिटी है...

भाादी ऐसी करनी है कि लोग देखते रह जाए।

खास तौर पर चाचा–पट्टीदार।

चीता की मां चीता से...

अरे बेटा! वह तो सब ठीक है...

पर उमर हो रही है तुम्हारी।

अब हम लोग भी बुढ्ढे हो रहे हैं, कब तक बना–बना कर खिलाएंगे तुम्हें?

जल्दी से भाादी करो और फिर मुझे जीते जी पोते का भी तो मुंह देखना है।

तुमने तो अपनी वाली कर ली है।

देखो तुम्हे कैसी लड़की मिली थी दिल्ली में?...

जो दूसरे के साथ भाग भी गयी।

चीता, मां से कहता है...

मां तेरी बकवास भ्रुरू हो गयी है ना...

अरे तू हीरो की मां है, तू कैसे बुढ्ढी हो सकती है?

मां, चीता से कहती है...

हां मैं तो अमर होकर आयी हूं ना...

मेरी बात ध्यान से सुन ले, मैं फोटो भेज रही हूं लड़की की।

लड़की भारीफ है और अच्छे खानदान की है।

लड़की के मां–बाप नहीं है। उसका पालन–पोशण उसके मामा ने किया है लेकिन बहुत ही संस्कारी बिटिया है।

चीता, मां तुमको क्या बताएं?

तुम्हारे बेटे के उपर भाहर की सारी लड़कियां फिदा हैं।

लेकिन ठीक है अगर तुम जिद कर रही हो तो फोटो देख लेता हूं।

यह कहकर चीता फोन काट देता है।

दो दिन के बाद चीता, मोहन और पिंटू के साथ अंदर कमरे में बैठा है।

तभी गेट से खटखट की आवाज आती है।

चीता अपने कमरे से निकलकर गेट की तरफ आता हैं।

तेज आवाज में आकर चीता पूछता है कि कौन है और किससे मिलना है?

बाहर से आवाज आती है कि पोस्टमैन हूं सर!

एक लिफाफा है आपका।

चीता आ रहा हूं भाई।

चीता को अंदे ाा पहले ही था कि लड़की की फोटो आयी होगी, मां ने भेजा होगा।

चीता पोस्टमैन से लिफाफा लेता है।

लिफाफा खोलता है, उसमें लड़की की फोटो रहती है।

तभी पोस्टमैन जाने लगता।

चीता पोस्टमैन को रोकर उसे पचास रूपये देता है और कहता है कि चाय पी लेना।

आप बड़े अच्छे पोस्टमैन हो।

चीता की यह बात सुनकर पास में खड़ा मोहन मुस्कुराता है।

मोहन, चीता से पूछता है कि भैया लिफाफे में क्या है?

चीता, मोहन से...

अरे यार! मां ने एक लड़की की फोटो भेजी है भाादी के लिए. ..

वही फोटो लेकर पोस्टमैन आया था।

मोहन मसखरी करते हुए पिंटू को बुलाता है।

पिंटू घर के अंदर से चीता और के पास आता है।

पिंटू, क्या हुआ?

क्यों चिल्लमचिल्ली मचाए हो?

मोहन, पिंटू से...

अरे! भैया के लिए घर से फोटो आयी है लड़की की।

अरे वाह! फोटो हमें भी दिखाओ।

चीता, पिंटू और मोहन से...

अरे! रूकोगे यार तुम लोग...

भाादी मुझे करनी है और फोटो तुम लोगों को देखने की जल्दी है।

चीता लिफाफे से लड़की की फोटो निकालता है।

फोटो में लड़की वास्तव में बहुत अच्छी दिखती है।

लड़की सिम्पल है, सुंदर है और चेहरे पर मासूमियत साफ नजर आ रही है।

मोहन और पिंटू फोटो देखकर खु ाी से उछल पड़ते हैं।

उधर चीता भी फोटो देखकर मन नही मन खु ा हो रहा है।

चीता, मोहन और पिंटू से, अरे यार!..

यह तो फोटो है, मगर हकीकत में पता नहीं लड़की कैसी होगी?

और फिर मुझे तो हीरोइन से ही भाादी करनी है।

ताकि लोग देखते रह जाए।

तीनों बातचीत करते रहते हैं।

तभी चीता के घर से उसकी मां का फोन आ जाता है।

चीता की मां, चीता से फोन पर पूछती है कैसे हो बेटा?

फोटो मिली तुम्हें लड़की की?

चीता, मां से...

सब ठीक है मां।

अभी–अभी लड़की की फोटो मिली है, उसी को ही देख रहा था।

मां, हां देख लो।

कैसी लगी?

लाखों में एक बहू चुना है तुम्हारे लिए।

चीता मां से धीमी आवाज में...

मां कुछ खास तो नहीं है लड़की...

भाव खाते हुए चीता।

मां, सुनो!

लड़की के मामा परसो आएंगे तुमसे मिलने।

थोड़ा घर की साफ–सफाई कर लेना और तमीज से पे ा आना, समझे!

चीता, मां से... ठीक है मां लेकिन इतनी भी क्या जल्दी है?

इतनी बात कहकर चीता फोन काट देता है।

पिंटू और मोहन को बुलाकर चीता कहता है...

भाई लड़की के मामा आ रहे हैं, हमें देखने के लिए तो घर की साफ–सफाई कर डालते हैं।

जहां भी भाराब की बोतलें हों, सिगरेट के डिब्बे हों, सब साफ कर लिया जाए।

हां एक बात और, उनके आने पर एक आदमी मेरे पास रहेगा और एक आदमी गेट पर। कोई भी भाराब पीकर आए या बिना पिये आए उसे घर के अंदर ना आने देना।

उसे बाहर से ही वापस भेज देना और बता देना कि भैया घर पर नहीं हैं।

मोहन और पिंटू, ठीक है भैया!

पूरी नाकेबंदी कर दूंगा।

अगली सुबह लड़की के मामा चीता के भाहर आते हैं।

इधर चीता पूरी मुस्तैदी से लगा है।

घर की साफ–सफाई और कोना–कोना, चप्पा–चप्पा चमका देते हैं।

चीता, मिठाई, नमकीन, दूध सब लाकर रख देता है।

उसके बाद चीता बाल कटवाने के लिए सैलून पर चल जाता है।

वहां एक मसाज लेता है, बालों की कटिंग करवाता और फिर वापस लौट आता है।

चीता, पिंटू और मोहन से पूछता है...

ये बताओ तुम्हारा चीता कैसा लग रहा है?

भी ो में बार–बार चीता अपना चेहरा देखता है।

इधर खाने–पीने की पूरी व्यवस्था मोहन और पिंटू ने रेडी कर रखी है।

तभी चीता जोर से चिल्लाता है...

अरे साला!

छोड़ दिया...

मोहन और पिंटू दौड़कर चीता के पास आते हैं और पूछते हैं कि अरे क्या हुआ भैया!

चीता, मोहन कहता है कि अरे यार!

नाक का बाल नहीं काटा है, छोड़ दिया है।

बड़े बदमा ा होते हैं ये नाई।

बताया था कि नाक के बाल काट देना।

चीता फिर भागा–भागा सैलून पर जाता है।

पिंटू, मोहन से हंसते हुए कहता है...

भाई कहां–कहां के बाल कटवाएंगे ये, पूरा जमूरा बन गए हैं।

जिसकी भाादी होगी इनसे, उसके भी करम फूट जाएंगे।

फिर दोनों ठहाका मारकर हसंते हैं।

थोड़ी देर बाद चीता नाक के बाल कटवाकर वापस आता है।

अब चीता पूरी तरह रेडी वाली पोजी ान में है।

काली जींस, काली भार्ट और काला च मा पहनकर एकदम तैयार है।

इतने में ही लड़की के मामा घर आ जाते हैं।

गेट खटखटाते हैं।

चीता दौड़ कर गेट खोलता है और औपचारिकता निभाते हुए पूछता कि आपको किससे मिलना है?

लड़की के मामा चीता से कहते हैं कि...

हम सैदपुर से आ रहे हैं।

आपकी माता जी से हमारी बात हुई थी।

अपनी भांजी की भाादी के सिलसिले में।

चीता जी–जी करते हुए तुरंत चरण स्प र्ा करता है और अपना परिचय बताया है।

फिर लड़की के मामा को घर के अंदर आने को कहता है।

पिंटू और मोहन भी लड़की के मामा को प्रणाम करते हैं।

लड़की के मामा घर के अंदर आ जाते हैं।

चीता, चीते जैसी फुर्ती दिखाते हुए उनकी आव–भगत करता है।

खाना–पीना खाकर लड़की के मामा चीता से पूछते हैं कि बाबू क्या करते हो?

कहां तक पढ़ाई किए हो?

चीता फटाक से बोलता है...

मामा जी, मैं तो कोचिंग पढ़ाता हूं।

बारहवीं तक की पढ़ाई यूपी बोर्ड से की है।

उसके बाद बीएससी किया लेकिन फिर पढ़ने का टाइम नहीं मिला।

चूंकि जिम्मेदारियां थी और मैं ही घर का कमाने वाला था।

अब मैं पढ़ाते–पढ़ाते आईआईटी वालों को भी पढ़ाता हूं।

दूसरे हम लड़ने वाले मिजाज के हैं।

लड़की के मामा...

चीता से पूछते हैं...

लड़ने वाले मिजाज का मतलब?

चीता, लड़की के मामा से कहता है...

लड़ने वाले मिजाज का मतलब है कि लड़ाका टाइप।

हम लोग संघर्श से पीछे नहीं हटते।

कोई भी स्थित हो हार नहीं मानते हैं।

लड़की के मामा फिर चीता से पूछते हैं कि कितनी कमाई हो जाती है कोचिंग से?

चीता लड़की के मामा से...

मामा जी तकरीबन 150 लड़के हैं कोचिंग में।

यहां का खर्चा और गांव का खर्चा सब अच्छे से निपटाकर ठीक–ठाक बच जाता है।

अभी जो गांव में नया घर बना है, उसे भी हम ही बनवाए हैं।

लड़की के मामा चीता की बातों से संतुश्ट हो जाते हैं और चीता के सामने ही उसकी मां को फोन करते हैं।

फोन पर लड़की के मामा चीता की मां से कहते हैं कि उन्हें लड़का पसंद है और मेरी तरफ से यह रि ता पक्का समझिए।

उसके बाद अपने घर पर भी फोन करके बताते हैं कि लड़का बहुत अच्छा है, अपने पैर पर है।

मेहनती है, देखने में भी ठीक–ठाक है।

उसके बाद लड़की के मामा, चीता से मिलकर अपने घर लौट जाते हैं।

इधर रात को चीता की मां, चीता को फोन करती है और उससे कहती है कि तुम लड़की के मामा को बहुत पसंद हो।

लेकिन वो पूछ रहे थे कि अगर लड़के की डिमांड कुछ हो तो बता दें?

चीता मां से, अरे नहीं मां!

मैं दहेज से सख्त नफरत करता हूं।

मुझे कुछ नहीं चाहिए।

मैं लड़की से पहले बात करूंगा तब भाादी के लिए आप बात को आगे बढाइएगा।

चीता की मां लड़की का नंबर उसे दे देती है।

चीता लड़की से बातचीत करना भाुरू कर देता है।

वह अपने गुच्छेदार बातों में उसे खूब लपेटता है।

उंची–उंची फेंकता है और ढ़ेर सारे सपने दिखाता है।

फिलहाल रोमांस जोरों पर है।

रही बात भाादी की तो चीता खुद भी नहीं जानता कि उसका मूड कब बदल जाए कि भाादी होगी की भी नहीं।

यह तो आने वाला वक्त ही बताएगा।

कुछ दिनों तक चीता अपनी पुरानी जिंदगी जीता है।

फिर हीरो बनने की खुमारी उसे छाने लगती है।

एक दिन अचानक से साहबजादे प्लेन का टिकट कटाकर मुंबई पहुंच जाते हैं।

मुंबई भाहर की आबो–हवा देख कर वहां भरपूर सांस लेते हैं।

सबसे पहले डांस बार का आनंद उठाते हैं।

उसके बाद पैसे की कोई किल्लत नहीं है तो अंधेरी जैसे पॉ ा इलाके में कमरा ले लेते हैं।

चीता को वि वास नहीं अति वि वास है खुद पर।

चीता अपनी मक्कारी से भी बखूबी परिचित हैं।

जो झूठ को सच बना दे और सच को झूठ।

ऐसा किरदार जो जीता है, वो है चीता।

खैर इस बार चीता पूरी तैयारी से मुंबई आए हैं।

चाहे कितना ही संघर्श करना पड़े मगर हार नहीं मानेंगे।

हीरो बनकर ही जाएंगे।

पैसे की भी पूरी मजबूत व्यवस्था करके आए हैं।

हीरो बनने के लिए चीता ने सुन रखा था कि पहले एक अच्छा से फोटो भाूट करवाना पड़ता है।

फिर उसको डायरेक्टर और प्रोड्यू ार के पास लेकर जाते हैं।

जहां ऑडि ान देना पड़ता है।

इस टाइप का रिसर्च चीता ने कर रखा है।

चीता महफिल बाज आदमी है।

चूंकि रूम वगैरहा सेट हो चुका है।

अब मुंबई की पहली सुबह देखने को वह बहुत ही आतुर है।

चीता अगली सुबह चार बजे का अलार्म लगाता है।

अलार्म बजता, उससे पहले चीता खुद ही बज जाता।

मतलब चीता टाइम से पहले ही जग जाता है।

वह फटाक से उठता है, तैयार होता है और मॉर्निंग वॉक पर निकल जाता है।

करीब एक घंटे तक चीता मुंबई की सड़कों पर टहलता है।

और जब थक जाता है तो उसकी नजर वहीं पास में एक चाय की दुकान पर जाती है। जहां कुछ लोग चाय की चुस्की ले रहे थे।

चीता भी टहलते हुए चाय की दुकान पर पहुंचता है और चाय लेता है।

वहीं चाय पर चर्चा करते हुए दो–तीन लोग आपस में किसी पॉलिटिकल मैटर पर बात कर थे।

तभी फटाक से चीता बिना देर किए उस बहस में कूद जाता है।

चीता बड़ी बेबाकी से अपनी बात रखता।

जिससे वहां खड़े लोग चीता की बातों से बहुत ही आकर्शित होते हैं।

अब चाय पर चर्चा समाप्त हो चुकी है।

अब चीता वहां खड़े लोगों में अपना परिचय देता है...

मेरा नाम भोखू ठाकुर है, प्यार से मुझे लोग चीता कहते हैं।

पे ो से मैं एक टीचर हूं और उत्तर प्रदे ा का रहने वाला हूं।

जिंदगी में कुछ हटकर करना चाहता हूं।

वही रोज की खाने–कमारे वाली लाइफ स्टाइल मुझको तो बिल्कुल कबूल नहीं है।

कुछ बड़ा करना है, फाड़ देना है।

हीरो बनने आया हूं और हीरो बनकर ही जाऊंगा।

चाहे कुछ भी हो जाए।

चीता के परिचय देने बाद, वहां खड़े तीनों युवक भी अपना परिचय देते हैं।

तीनों युवकों में एक युवक जिसका नाम नरे ा है, वह चीता के हीरो बनने की बात को तपाक से लपक लेता है।

नरे ा, चीता से कहता है कि फिर तो आप एकदम सही जगह पर आए हो।

वैसे मेरा नाम नरे ा है...

मैं पे ोवर फोटोग्राफर हूं।

और केवल बॉलीवुड के लिए ही फोटो भूट करता हूं।

आपने अपनी कहीं फोटो भूट कराई है कि नहीं?

चीता, नरे ा से...

अरे नहीं भाई!

मैं कल ही तो मुंबई आया हूं।

पहले तो रहने का इंतजाम किया। एक रूम किराय पर लिया है।

मुंबई में ये मेरी पहली सुबह है।

देखिए क्या बढ़िया इत्तेफाक है कि आप मुझे सुबह–सुबह मिल गए।

नरे ा, चीता से कहता है कि भाई ऐसे ही झटके में यहां किस्मत खुलती है।

खैर चाहे तो, आप मेरे स्टूडियो पर आ जाइए।

पहले वहां हम लोग एक फोटो भूट करते हैं, उसके बाद फिर मैं आपको कुछ लिंक दूंगा। कुछ डायरेक्टर हैं...

कुछ प्रोडक ान हाउस हैं।

आप अपना एलबम लेकर उनसे मिल लेना।

उसी भााम चीता, नरे ा के स्टूडियो पहुंचता है।

वहां नरे ा, चीता का बड़ी बेसब्री से इंतजार कर रहा है।

जैसे कोई कसाई किसी बकरे का करता है।

चीता, नरे ा से मिलता है।

नरे ा चीता को चाय–कॉफी पूछता है।

चीता कहता है कि नरे ा भाई हम तो दे ाी टाइप के आदमी हैं।

हम तो चाय ही पियेंगे वो भी बिना दूध वाली।

नरे ा चीता के लिए चाय और अपने लिए कॉफी मंगवाता है।

दोनों चाय–कॉफी पीते हैं।

अब चाय और कॉफी का दौर खत्म हो चुका है तो नरे ा मुद्दे पर आता है।

नरे ा, चीता से कहता है कि देखो भाई ये दो–तीन एलबम है।

इन तीनों एलबम के अलग–अलग रेट हैं।

आप इन तीनों में से कोई भी चुन सकते हो।

चीता, नरे ा से थोड़ा दिलेर अंदाज में बोलता है।

नहीं बजट की कोई बात नहीं बस काम अच्छा होना चाहिए।

मुझको एकदम छा जाना है बॉलीवुड पर।

नरे ा, चीता से कहता है कि काम एकदम भाानदार होगा।

फिर नरे ा, चीता को लेकर फोटो भाूट पर लेकर चला जाता है।

अलग–अलग लोके ान पर फोटो भाूट होता है।

तमाम तरह के डिजाइनर कपड़ों में नरे ा, चीता की फोटो लेता है।

डॉक्टर, पुलिस, वकील और कॉलेज गोइंग ब्वाय!

सब तामझाम कर डालता है।

अंत में नरे ा, चीता से पैसों की बात करता है।

चीता कै ा में पेमेंट देता है।

कुछ पैसे कम हैं तो नरे ा कहता है...

अरे! भाई कोई बात नहीं..

बाद में दे दीजिएगा।

चीता का आज का भोड्यूल पूरा टाइट था।

भाानदार फोटो भूट हुआ वह भी अलग–अलग लोके ान पर।

अब चीता का एलबम तैयार हो रहा है।

चीता मन ही मन खूब मगन है।

कारण भी है कि चीता इस बार कसम खाकर आए हैं कि बिना काम पूरा हुए किसी से कोई बात नहीं करेंगे।

फिलहाल फोटो भूट के बाद चीता खुद को बॉलीवुड का स्टार मान चुके हैं।

अपनी फिटनेस के लिए एक अच्छा सा जिम भी ज्वाइन कर लेते हैं।

जिम का पहला दिन है।

चीता जिम में जाते हैं और कोच से पूछते हैं...

कोच साहब!

आप ये बताओ कि मेरी फिटनेस में क्या कमी है?

वैसे तो मैं फुली फिट हूं।

लेकिन खिलाड़ी भैया वाली फिटनेस चाहिए।

मैं उनका बहुत बड़ा फैन हूं।

मेरी हाइट छह फिट है..

रंग गोरा है..

बदन भी गठीला है।

बस मेरे ये गाल थोड़े से फूले से हैं।

आप इस पर थोड़ा सा काम कर लीजिए।

कोच, जी सर!

फैट कम हो जाएगा।

चीता, कोच से कहते हैं...

कम तो हो जाएगा, ये मैं भी जानता हूं...

मगर मेरे पास ज्यादा टाइम नहीं हैं।

दरअसल मेरी पिक्चर भ्रूट होने वाली है।

कोच, ठीक है!

आप सुबह– ाम दोनों टाइम जिम आइए, मैं प्रयास करूंगा।

ओके! फिर मिलते हैं।

अब चीता को चुल्ल मच चुकी है कि कितनी जल्दी वह अपना एलबम देखे।

चीता नहा–धो कर तैयार है।

स्टूडियो खुलने का इंतजार है।

और तभी नरे ा का फोन भी आ जाता है।

नरे ा फोन पर चीता से कहता है...

भाई एलबम बन गया है।

अगर टाइम हो तो आप स्टूडियो आ जाइए।

चीता, नरे ा से भाई बिल्कुल टाइम ही टाइम है।

मैं अभी आया!

चीता, नरे ा के स्टूडियो जाता है।

नरे ा, चीता का महबूत की तरह इंतजार कर रहा है।

चीता स्टूडियो पर पहुंच जाता है।

नरे ा, चीता से...

आओ भाई आओ!

मैंने पूरे कैरियर में ऐसा दमदार फोटो भूट नहीं किया है।

क्या लग रहे हो आप?

कसम से छा गए हैं आप तो!

चीता को तारीफ सुनकर रहा नहीं जा रहा है।

हल्की हंसी हंसते हुए चीता, अरे नहीं भाई यह कुछ नहीं है।

असली लड़ाई तो अभी बाकी है।

नरे ा अपने नौकर को बोल कर चीता के लिए चाय और अपने के लिए कॉफी मंगवाता है।

चाय और कॉफी की चुस्की के साथ चर्चा जोरों पर हैं।

चीता अपनी एलबम देखकर खूब उत्साहित है।

नरे ा ने तो वैसे भी अपनी तारीफों से उसे रेत के पहाड़ पर बैठा दिया है।

चीता, नरे ा से...

भाई फोटो भूट तो हो गया है..

अब एलबम लेकर किससे मिलने जाना होगा।

ये समझ नहीं आ रहा है?

नरे ा, चीता से कहता है...

आप मुझे भाई बोले हो तो भाई का भी कुछ फर्ज बनता है।

मैंने कल भााम ही एक डायरेक्टर से टाइम लिया है।

आपको उनके ऑफिस मिलने जाना है।

भााम को कोई काम तो नहीं है आपको?

चीता, नरे ा से...

नहीं भाई कोई काम नहीं हैं...

बिल्कुल भााम को मिला जाएगा डायरेक्टर से।

नरे ा, चीता से कहता है कि डायरेक्टर के पास स्क्रिप्ट रेडी है।

और तमाम किरदारों की कॉस्टिंग हो भी चुकी है।

हीरों के लिए डायरेक्टर को एक नया चेहरा चाहिए था।

वैसे तो मैं डायरेक्टर साहब को बोल चुका हूं कि आपकी तला ा अब खत्म हो चुकी है। आप मूवी की तैयारी भाुरू करिए, आापको नया चेहरा समझिए मिल गया है।

चीता, नरे ा की ये बातें सुनकर फूले नहीं समा रहा है।

चीता को भााम की इतनी जल्दी है कि उसका बस चले तो वह सूरज को अभी अस्त कर दे।

पर मजबूर है कुदरत के कायदों से।

फिलहाल चीता, नरे ा से मिलकर वापस कमरे पर आता है।

पूरा दिन जैसे किसी आ ाक की इ क की खुमारी में काटती है।

वैसे ही चीता पूरे दिन बेचैन रहता है।

चीता नहा –धो कर तैयार होता है...

मतलब काली जीं ा, काला च मा और काली भार्ट।

और अब तक 76 दफे आइने के सामने आ चुका है।

भी ो के सामने जाकर अपने फूले हुए गालों को पिचकाने का काम करता है।

चीता का पूरा दिन इसी प्रयास में निकल जाता है।

फिर भाम होती है।

चीता के फोन के घंटी बजती है...

चीता फोन उठाता है..

फोन पर चीता, नरे ा से, जी भाई!

क्या हुकुम?

नरे ा, अरे भाई!

हुकुम कुछ नहीं है...

बात यह है कि डायरेक्टर के ऑफिस तक आटो से चला जाए या बस से?

चीता, नरे ा से उत्साह में बोलता है...

अरे नरे ा भाई एक कार ले लेते हैं।

जो पेमेंट होगा पेड कर दूंगा।

कहां धक्का मुक्की में चला जाएगा?

नरे ा, चीता से ओके भाई!

तो मैं कार करके आपके रूम के पास आ रहा हूं।

आप तैयार रहिए।

चीता, नरे ा से...

अरे! नरे ा भाई

आपका ये सुपरस्टार भाई सुबह से ही तैयार है।

आप आइये तो सही।

नरे ा हंसते हुए, आके सर!

आता हूं...

नरे ा कार लेकर कमरे के नीचे पहुंचता है।

चीता को फोन करता है और फिर चीता कार में बैठ कर डायरेक्टर के आफिस की तरफ निकल जाता है।

नरे ा और चीता डायरेक्टर के ऑफिस पहुंचते हैं।

ऑफिस में पहले से ही एक आदमी एलबम के साथ बैठा है...

तस्वीरें देख रहा है।

इधर नरे ा ऑफिस का दरवाजा खोलता है।

तभी चीता बिजली सी फुर्ती दिखाते हुए जोरदार सैलूट ठोकता है।

सैलूट ऐसा है कि डायरेक्टर के हाथ से एलबम नीचे गिर जाती है।

चीता के सैलूट की तासीर बिल्कुल सेना के रंगरूट जैसी है।

खैर मौके की नजाकत को देखते हुए नरे ा, चीता का परिचय करवाता है...

यही आपकी फिल्म के हीरो हैं।

आपको जिस नये चेहरे की तला ा की थी वो यही हैं।

नरे ा, चीता की तरफ इ ाारा करते हैं...

ये हैं डायरेक्टर पीटर मिश्रा!

जो दर्जनभर हिट फिल्में दे चुके हैं।

पीटर मिश्रा...

नरे ा और चीता को बैठने के लिए बोलते हैं।

डायरेक्टर पीटर मिश्रा के पास इस बीच ढेर सारे फोन कॉल आते रहते हैं।

जैसे न जाने कितनों का तगादेदार है।

डायरेक्टर पीटर मिश्रा, नरे ा और चीता से...

अरे यार! बहुत व्यस्तता है...

उस पर से ये फोन कॉल्स बहुत परे ाान कर रहे हैं।

आज मेरी सिक्रेटरी भी छुट्टी पर है तो फोन भी मुझे उठाना पड़ रहा है।

डायरेक्टर, नरे ा और चीता की फोटो भाूट वाली एलबम लेता है।

एक–एक करके सारी तस्वीर देखता है।

उसके मुंह से अचानक से निकलता है....

फनटास्टिक, वेरी गुड, बहुत अच्छे।

तस्वीरे देखने के बाद पीटर मिश्रा, चीता से बोलता है....

चीता जरा उस तरफ देखो,

थोड़ा चेहरा उस तरफ करो।

अब हल्का स्माइल करो।

अच्छा सुनो!

एक बार बाहर जाओ और फिर वॉक करके ऑफिस में आओ।

चीता उठता है, ऑफिस के बाहर जाता है और फिर अंदर आता है।

डायरेक्टर पीटर मिश्रा...

वेल भॉट, वेलडन!

क्या भॉट दिया है?

मिल गया.. मिल गया....

मुझे मेरा हीरो मिल गया।

नरे ा भाई मुबारक! मुबारक!

यह सब देखकर चीता अपनी खु ाी का इजहार नहीं कर पा रहा है।

वह किसी तरह खुद को संभालता है।

फिर थोड़ी सी हिम्मत करके डायरेक्टर से पूछ बैठता है...

सर! स्टोरी क्या है और मेरा रोल क्या है?

स्क्रिप्ट पूरी तैयार है कि नहीं?

डायरेक्टर पीटर मिश्रा...

सब रेडी है मेरे हीरो!

सारी स्टार कॉस्टिंग हो चुकी है।

हीरोइन की भी कॉस्टिंग हो गयी है।

स्क्रिप्ट तैयार है।

बस मुझे हीरो की तला ा थी..

एक नये चेहरे की तला ा थी...

वो भी आज पूरी हो गयी।

ओके! अब आप लोग जाइए, मुझे बहुत काम है।

मेरा नंबर ले लीजिए जल्द ही पिक्चर भाूट की डेट देता हूं।

चीता, ओके सर!

चीता और नरे ा ऑफिस से निकल कर वापस आ जाते हैं।

अगली सुबह जिम जाकर चीता खूब पसीना बहाता है।

फिर 17 अंडे का ना ता करके नहा–धो कर तैयाार हो जाता है।

इतने में ही नरे ा का फोन आता है।

भाई डायरेक्टर पीटर मिश्रा का फोन आया था।

लोके ान फाइनल है,

स्टार कॉस्ट रेडी है।

पीटर सर बोल रहे थे कि पहला सीन, हीरो–हीरोइन का है।

चीता खु ाी से खौलते हुए, नरे ा से बोलता है

भाई मैं स्टूडियो पहुंचता हूं।

स्टूडियो पहुंच कर चीता, नरे ा को गले लगाता है..

और बड़े ही गर्मजो ाी से उसका भाुक्रिया अदा करता है

और फिर पूछता है कि नरे ा भाई भूट के लिए कहां चलना है?

नरे ा, चीता से...

नाला–सुपारा!

चीता चौंकते हुए..

नाला–सुपारा!

भूट की कौन सी जगह है भाई!

नरे ा, चीता की बात काटते हुए..

अरे! भाई ये स्टोरी की डिमांड है।

लोके ान रियल लगना चाहिए।

मेरी बात हुई थी पीटर मिश्रा से इस बारे में।

वह बोले, मुझे रियलटी चाहिए।

भाई पीटर मिश्रा साउथ का रामू है... रामू।

वह जैसा कहे.. करते जाओ!

उसने ना जाने कितनों को स्टार बना दिया।

तुम्हारा तो स्टार बनना बिल्कुल पक्का है।

चीता और नरे ा भूट के लिए नाला–सुपारा पहुंच जाते हैं।

वहां डायरेक्टर अपने फिल्मी सितारों के साथ मौजूद रहता है।

डायरेक्टर पीटर मिश्रा से सेट पर नरे ा और चीता की मुलाकात होती है।

डायरेक्टर पीटर मिश्रा, चीता से अरे मेरा हीरो आ गया।

आओ–आओ चीता...

चलो जल्दी से चेंज रूम में जाओ

वहां कपड़े रखे हैं, उनको पहन लो।

मेकअप वाला बैठा है, मेकअप करा लो और जल्दी से रेडी हो जाओ।

फिर चीता डायरेक्टर पीटर मिश्रा से कहता है, सर प्लीज!

एक मिनट के लिए मेरी बात सुन लीजिए।

डॉयलॉग क्या है... बता देते तो याद कर लूं?

डॉयरेक्टर पीटर मिश्रा, चीता से...

आज गाने का भाूट है, कोई डॉयलाग नहीं है।

चीता, डायरेक्टर पीटर मिश्रा से, सर!

थोड़ी स्टोरी बता देते तो अच्छा था।

डायरेक्टर पीटर मिश्रा... ठीक है..

मैं तुम्हें एक लाइन में सुनाता हूं, मेरे पास टाइम नहीं है।

चीता, जी सर, प्लीज सुनाएं!

डायरेक्टर पीटर मिश्रा...

देखो यह एक हॉरर मूवी है!

इसमे गांव की एक प्रेतनी को भाहर के एक बांके नौजवान लड़के से प्यार हो जाता है। और वह लड़का तुम हो।

फिर वह प्रेतनी उसे पाने की खातिर की हर जतन करती है।

और अंत में बांके नौजवान लड़के के भारीर में प्रवे ा कर जाती है।

लड़के के घरवाले उसे एक तांत्रिक के पास ले जाते है।

फिर तांत्रिक उस प्रेतनी से बांके नौजवान को छुटकारा दिलवाता है।

चीता, वाह पीटर सर!

कमाल की स्टोरी है..

एकदम यूनीक आइडिया है।

मगर मेरा एक सुझाव है...

बांके नौजवान लड़के को जब प्रेतनी के सच्चे प्यार का एहसास होता है तो वह लड़का भाहर छोड़कर उसकी खोज में गांव चला जाता है।

बांके नौजवान लड़का उसके प्यार में तांत्रिक बन जाता है कि भाायद प्रेतनी किसी को पकड़े और फिर तांत्रिक बना लड़का उसे खोज ले।

डायरेक्टर पीटर मिश्रा...

चीता...फैनटास्टिक मॉय बॉय, वेलडन!

गजब का आइडिया है।

मजा आ गया..

बिल्कुल स्क्रिप्ट ऐसी ही रहेगी।

इतने में ही डायरेक्टर पीटर मिश्रा की नजर सयानी पर पड़ती है।

पीटर सयानी को आवाज देते हैं।

सयानी फिल्म की हीरोइन है।

सयानी पीटर के पास आती है...

जी सर बताएं!

मैं तो मेकअप करके रेडी हूं...

डायरेक्टर पीटर मिश्रा.. सयानी से

सुनो ये तुम्हारे हीरो हैं!

मिस्टर चीता, मतलब फिल्म के हीरो हैं।

चीता मुस्कुराते हुए सयानी से हाथ मिलाता है।

सयानी भी चीता को हैलो! बोलती है।

सयानी, डायरेक्टर पीटर मिश्रा से कहती है कि यही हैं चीता जी!

आपकी खोज...

जिनके इंतजार में फिल्म छह महीने से बंद थी।

डायरेक्टर पीटर मिश्रा, सयानी से... बिल्कुल सही

यही है मेरा बॉय...

सयानी सुनो!

तुम दोनों एक दूसरे का नंबर ले लो, मिलते–जुलते रहो।

आज तो सिर्फ गाने का ही भूट है।

अरे यार!

ये कोरियो ग्राफर कहां रह गया?

तभी कोरियो ग्राफर भी आ जाता है।

लाइट, कैमरा और एक ान होता है।

म्यूजिक बजता है।

चीता और सयानी रिहर्सल करते हैं।

चीता इसी बीच... नरे ा भाई एक बात करनी है।

नरे ा चीता से.. बोलो भाई, क्या बात है?

चीता, नरे ा से....

भाई आप पीटर सर को बोलो कि हीरोइन कोई दूसरी लड़की लें।

सयानी को देखो, एक तो कद में छोटी है, उपर से उतनी ही मोटी है।

फिर उस पर उम्र दराज भी लगती है।

नरे ा, चीता से कहता है...

भाई मेरी बात हुई थी इस मुद्दे पर।

भाई आप बात को समझो

सयानी भी साउथ की स्टार है।

उसकी अपनी एक अलग ऑडियंस है।

बड़ी मु कल से पीटर साहब ने उसकी डेट ली है।

चीता मेरे भाई.. मेरे हीरो...

पीटर सर जैसा कहें, तुम बस वैसा ही करते जाओ।

तुम्हें सुपर स्टार बनने से कोई रोक नहीं सकता।

तभी पीटर सर की आवाज गूंजती है...

सेट रेडी है.. रिहर्सल हो चुका है.. अब फाइनल भॉट है।

सभी कलाकार सेट पर आते हैं।

गाने की भूटिंग भुरू होती है।

कोरियो ग्राफर... चीता और सयानी को सारे स्टेप बताता है।

मगर गाना बजते ही चीता अपना हुक स्टेप करने लगता है...

जिसे वह गांव की भादी की में अक्सर करता रहता था।

तभी कोरियोग्राफर कट बोलता है...

मगर पीटर सर को चीता का यह हुक स्टेप पसंद आ जाता है।

पीटर सर! चीता से कहते हैं...

वाह मेरे हीरो, छा गए तुम तो...

फिर गाने की भूटिंग पूरी होती है।

भूट खत्म होता है।

पीटर सर.. सयानी को कुछ पेज देते हैं

और कहते हैं कि तुम दोनों मिलकर सीन और डॉयलॉग का रिहर्सल करते रहो।

मैं अगली भूट का लोके ान बताता हूं।

तुम लोग डॉयलॉग तैयार रखो..

मेहनत करो.. और आग लगा दो।

तभी पैकअप–पैकअप की आवाज आती है।

अब सबकी वापसी होती है।

वापसी में चीता और नरे ा के साथ सयानी भी आती है।

तीनों अंधेरी पहुंचते हैं।

सभी टाटा, बाय–बाय करके अपने–अपने आवास पर चले जाते हैं।

इधर चीता खुद को सौ परसेंट हीरो मान चुका है।

सुबह होती है...

सयानी को चीता फोन करता है रिहर्सल के लिए।

फिर सयानी चीता से पूछती है कि...

आप अकेले रहते हैं क्या?

चीता फट से जवाब देता है

हां, मैं अकेले ही रहता हूं।

मैनें दो कमरे का मकान किराए पर लिया है।

अगर तुम्हें दिक्कत न हो तो यहीं चले आओ।

यही पर हम दोनों रिहर्सल करते हैं।

सयानी, चीता से.. ओके!

फिर मैं आ रही हूं, आपके आवास पर...

सयानी, चीता के आवास पर पहुंचती है।

चीता को सीन समझाती है।

दोनों अपना–अपना डॉयलॉग याद करते हैं।

फिर यही सीन और डॉयलॉग का खेल, लगभग चार से पांच महीनों तक चलता है।

अब चीता का सब्र टूट रहा है।

चीता नरे ा को फोन करता है...

नरे ा भाई क्या हुआ?

आगे की भाूटिंग का?

पीटर सर से कुछ बात हुई?

नरे ा, चीता से कहता है...

भाई मेरी बात तो हुई थी डायरेक्टर पीटर मिश्रा से...

पीटर सर, बहुत गुस्से में थे और बहुत परे ाान थे।

यह फिल्म उनका उनका सपना है।

चीता, नरे ा से कहता है...

भाई हुआ क्या है?

बात क्या है... खुलकर बताओ?

नरे ा, चीता से, अरे भाई!

एक इनवेंस्टर का चेक बाउंस हो गया है..

एक करोड़ का..

उसी के चलते भाूटिंग रूकी है।

पीटर सर! मुझे बोले हैं कि तुम कुछ व्यवस्था करो।

मैं अपना स्टूडियो भी गिरवी रखने जा रहा हूं...

फिर भी पैसे कम पड़ रहे हैं।

चीता, नरे ा से...

भाई कितना पैसा और चाहिए?

नरे ा, चीता से... भाई लगभग पचास लाख और चाहिए।

चीता, थोड़ा दुखी होता है...

और फिर धीमी आवाज में नरे ा से बोलता है

भाई मैं कुछ करता हूं.. ऐसे ही मौके को हाथ से जाने नहीं देना है।

नरे ा, चीता से... हां भाई कुछ इंतजाम करो पचास लाख का।

पीटर सर! पचास लाख का एक करोड़ रूपये भी देंगे और ऊपर से आप हीरो भी तो बन जाओगे।

चीता, नरे ा से कहता है... हां भाई बिल्कुल! मैं बताता हूं।

मायूस चीता मां को फोन करता है और सारी बात बताता है।

चीता रोते हुए... मां मेरी तो किस्मत ही खराब है।

मेरा एक गाने का भाूट हो चुका है।

फिल्म भी भारू हो चुकी है..

न जाने किस मुहुर्त में पैदा हुआ हूं

कितना अभागा हूं मैं।

चीता की बातें सुनकर मां का दिल पसीज जाता है।

वह चीता से पूछती है.. कैसे, क्या करना है?

कितना पैसा चाहिए, बताओ?

चीता, मां से कहता है...

तुम सड़क के किनारे वाला खेत अर्जेंट बेच दो।

मैं बाद में दूसरा खरीद लूंगा।

और फिर कुछ ही दिनों की तो बात है।

मेरे हीरो बनते ही पैसों की बरसात होगी।

चीता की बात को मां टाल न सकी।

वैसे भी घर की सारी जिम्मेदारी चीता ही देखता है।

आनन–फानन में मां ने खेत बेच दिया और सारा पैसा चीता के खाते में भेज दिया।

पैसा आते ही चीता में करंट आ गया।

चीते ने नरे ा को फौरन फोन किया...

भाई पैसों का इंतजाम हो गया।

आप पीटर सर को तुरंत बोलो की पिक्चर भ्रारू करें।

नरे ा, चीता से... बिल्कुल मेरे भाई।

कल से ही भ्रूटिंग भ्रारू हो जाएगी।

पैसा तुम इसी खाते में भेज दो।

चीता फौरन बैंक जाता है और नरे ा से मिले खाते में सारा पैसा भेज देता है।

इसके बाद चीता सयानी को फोन करता है।

सयानी से कहता है कि... टें ान नहीं लेना है।

पैसों का इंतजाम हो गया है।

अब पिक्चर कल से भ्रारू हो जाएगी।

किसी तरह से चीता का दिन गुजरता है

भाम ढलती है और रात होती है।

चीता रात को चीरते हुए सुबह उठता है।

नित्य क्रिया करके तैयार हो जाता है और अपने डॉयलॉग रटता है।

वहीं चीता की एक नजर फोन पर रहती है कि कब फोन की घंटी बजे। पर घंटों तक फोन की घंटी नहीं बजती है।

तब चीता खुद सयानी को फोन लगाता है

पर सयानी का फोन नहीं उठता है।

अब चीता नरे ा को फोन करता है...

नरे ा का नंबर बंद आता है।

चीता पीटर मिश्रा के नंबर पर फोन मिलाता है,...

उसका भी नंबर स्विच ऑफ बता रहा है।

चीता कुछ देर इधर–उधर कमरे में करता है।

कभी बाहर जाता है, कभी अंदर आता है..

कभी सीढ़ियों से छत पर जाता है और कुछ ही देर में नीचे भी आ जाता है।

अंत में हैरान–परे ाान चीता पसीने से लथपथ नरे ा के स्टूडियो जाता है।

वहां पहुंच कर पता चलता है कि स्टूडियो वाला रात में ही सारा सामान समेट कर स्टूडियो खाली करके चला गया है।

अब चीता समझ गया था कि खिलाड़ी के साथ खेल हो गया है।

वह ठगी की एफआईआर कराने के लिए थाने जाता है।

जहां उसे पहले से ही सयानी बैठी मिलती है।

सयानी को थाने में देख कर चीता हैरान हो जाता है!

चीता, सयानी से पूछता है...

कि अरे! तुम यहां कहां?

चलो अच्छा हुआ, तुम यहीं मिल गयी।

चीता इसके आगे कुछ और बोलता कि तभी सयानी ने अपना रूख सख्त करते हुए एकदम से अपना मिजाज बदला।

उसके हाथों में एक अप्लीके ान थी..

और वह थानेदार से बोलती है...

सर! यही वो दरिंदा है जो मेरे साथ पिछले दिनों से यौन भाोशण कर रहा है।

मुझसे भाादी का वादा किया था पर अब मुकर रहा है।

सयानी की बात सुनकर चीता ग ा खाकर गिर जाता है।

थानेदार भी चीता को अर्दब में लेता है।

चीता हो ा में आते हैं।

चीता को सारा खेल अब समझ में आ गया है।

चीता की हलक प्यास से सूख गयी है।

चीता, दरोगा से थोड़ा पानी मांगते हैं।

पानी पीकर चीता, सयानी से अकेले बात करने की गुजारि ा करता है।

सयानी, चीता से अकेले में...

चीता कुछ बोल पाता तभी सयानी उसका कॉलर पकड़ कर उसे दबोच लेती है

और धमकाती है.. कि खैरियत चाहते हो तो एक घंटे में मुंबई छोड़ दो..

नहीं तो रेप का मुकदमा लगवाऊंगी

फिर पूरी जिंदगी जेल में हीरो बनते रहना।

चीता, सयानी की धमकी को सीरियसली लेता है।

उससे हाथ जोड़ कर कहता है...

मैं मुंबई छोड़ने को तैयार हूं..

आप मेरे खिलाफ कुछ न करिए।

सयानी, चीता को घंटे भर का टाइम देती है।

चीता वापस रूम पर आता है।

अपना सारा सामान पैक करता है और तुरंग एयरपोर्ट के लिए निकल जाता है। वहां से प्लेन से लखनऊ

आ जाता है।

लखनऊ पहुंच कर चीता कुछ दिनों तक खोया–खोया और भ्रांत रहता हूं।

फिर अपने आप को समेटता है...

और कसम खाता है कि...

अब उसे अकूत पैसा कमाना है।

उसके लिए उसे चाहे कुछ भी करना पड़े।

वह पैसे के लिए हर काम करेगा।

चीता के पास सब था पर सच्चाई और गंभीरता नहीं थी।

अब चीता यारों की महफिल में कहता रहता है कि लाइफ में पैसा है तो सब है।

पैसा ज्यादा कमाना है फिर तो हीरो बन ही जाएंगे।

चीता ज्यादा पैसा कमाने की चाहत में कुछ लोगों की एक टीम बनाता है। उनमे से एक हैं जैद खान जो दुबई रिटर्न हैं।

जैद को अरबी का अच्छा ज्ञान है।

और दूसरी खासियत यह है कि जैद बहुत अच्छा चापलूस है।

जैद, चीता का खास सिपहसलार बनता है।

चीता की हर बात पर जैद ताली बजाता है..

उनकी हां में हां मिलाता है।

चीता और जैद में एक खूबी जो कामन थी..कि दोनों बहुत ही बातूनी हैं।

दूसरा साथी है...

अजय सिंह....

जो चीता की ही तरह स्मार्ट है और महत्वकांक्षा भी रखता है।

लेकिन ऐसी भाायद ही कोई बुरी लत हो जो अजय के पास न हो।

अजय ने अपनी जालसाजी से एक जज की बेटी से भाादी कर ली थी।

भाादी होने में चीता ने अजय की बहुत मदद की थी।

अजय की बुरी लत के चलते रि ता लंबा नहीं चला।

और अजय की पत्नी सिया, अजय को छोड़कर अपने पिता के घर लौट जाती है।

अजय को पैसों की जरूरत थी, तो वह पत्नी को मनाने न ो की हालत में उसके घर पहुंच जाता है।

अजय किसी तरह से हाथ–पैर जोड़ कर सिया को वापस अपने घर ले आता है।

ये सिलसिला कई बार ऐसे ही चलता रहा।

लेकिन आखिर में अजय अकेला रह गया।

अजय की रोज भाराब पीने की लत और उसके रंगीन मिजाजी से तंग आकर उसकी पत्नी सिया हमे ाा के लिए उसको छोड़ कर चली गयी।

तब अजय ने अपनी जरूरतों की खातिर चीता को अपना ि ाकार बनाया।

चीता को जाल में फंसाने की खातिर अजय ने खूब दोस्ती बढ़ाई।

चीता को ढेरों पैसों कमाने का ख्वाब दिखाया।

इस तरह से चीता भी अजय के साथ लोगों को ठगने का काम करने लगा।

मसलन, नौकरी के नाम पर पैसा लेना...

फर्जी मार्क ाीट बनाना,

ट्रांसफर, पोस्टिंग जैसे काम के नाम पर पैसा लेना भाुरू कर दिया।

अब चीता, अजय और जैद खान करोड़ों रूपये के सपने को पूरा करने के लिए अपने आवास पर जुआं भी खिलवाने लगे हैं।

इस तरह के तमाम गलत कामों से चीता के पास भरपूर पैसा आने लगा है।

अब चीता और और उसके साथियों की ऐया ाी दिन दूनी और रात चौगनी हो चुकी है।

भााम को क्लब जाना, जमकर भाराब पीना।

आए दिन चौराहे पर मारपीट करना...

लड़कियों से छेड़खानी... ये सब आदतें चीता और उसके साथियों की रूटीन हो गयीं थी। छेड़खानी और मारपीट के कुछ मामले भी थाने में दर्ज हैं।

लेकिन चीता पैसा, रूपया देकर मामले को रफा–दफा कर लेता है।

वक्त भी साथ है, पैसा भी इफरात है।

सारी चीजें चीता और उसके साथियों के मुताबिक हैं।

इसी बीच चीता के गांव से उसके बचपन के कुछ दोस्त रजत, विक्रम, नीरज और एक लड़का मोहन मिश्रा जो लखनऊ का ही रहने वाला है।

सभी चीता से मिलने उसके घर पर आते हैं।

रजत, चीता का जिगरी दोस्त है।

जो मुफलिसी के दिनों में चीता की बहुत मदद किया करता था।

चूंकि चीता के पास पैसों की अभी कोई कमी नहीं है और चीता यह दिखाना भी चाहता है कि वह पैसों से बहुत मजबूत हो चुका है।

इसीलिए चीता दोस्तों पर पानी की तरह पैसा बहाता है।

रात में पार्टी भ्रुरू होती है...

बाटी और मटन बनता है

भाराब का दौर पर दौर चलता है।

महंगी–महंगी भाराब की बोतले खाली हो जाती हैं।

चीता म्यूजिक सिस्टम ऑन करता है और अपने दोस्तों को डांस का हुक स्टेप करके दिखाता है।

सभी का मस्त इंटरटेनमेंट होता है।

पर कौन जानता था कि चीता की मलाईदार जिंदगी में एक भयानक मोड़ आने वाला है।

सुबह होती है...

रजत, विक्रम, मोहन सभी चीता से विदा लेते हैं।

और फिर जल्द ही मिलने की बात कहकर वापस गांव चले जाते हैं।

लेकिन उस रात पार्टी में बात ही बात में रजत अपने भाई की हत्या का बदला लेने की बात चीता से करता है।

उस पर न ो में धुत चीता भी अपनी मुहर लगाता है।

साथ ही उसकी हर तरह से मदद करने का वादा कर बैठता है।

रजत और उसके साथी लखनऊ से अब गांव पहुंच चुके हैं।

रजत अपने भाई की हत्या का बदला लेने के लिए रेंकी करता है...

और अपने साथियों के साथ एक फुलप्रूफ प्लान बनाता है।

प्लान के मुताबिक वारदात को अंजाम देता है।

दरअसल इस वारदात में एक राजनैतिक रसूक वाले व्यक्ति की हत्या होती है।

उसके साथ उसका चालक राणा भी मारा जाता है।

पूर्व विधायक को रजत अपने साथियों के साथ बेरहमी से मौका ए वारदात पर कई गोलियां मारता है।

इस हत्या की खबर से पूरे प्रदे ा में सनसनी सी फैल जाती है।

दरअसल मरने वाला विपक्षी पार्टी का पूर्व एमएलए है।

तो विपक्ष इस मुद्दे को लेकर सरकार पर हमलावार हो जाता है।

जगह–जगह पर धरना प्रद र्ान, पुतले फूंकना और सड़क जाम करना भुरू हो जाता है।

इस हत्या की जानकारी जब चीते को लगती है...

तो चीता की पहली प्रतिक्रिया यही है कि...

भाई की मौत का बदला लिया है।

ठीक काम किया है...

बहादुर है मेरा दोस्त।

चूंकि हत्या एक राजनैतिक रसूक वाले व्यक्ति की हुई है।

इसलिए पूरा प्र ाासनकि अमला आरोपियों की धरपकड़ में लग जाता है।

सड़के जाम होने लगती है।

इस बीच विधानसभा सत्र भी चल रहा है तो सदन में भी हंगामा भाुरू हो जाता है।

ऐसे माहौल में प्र ाासन हत्यारों का एनकाउंटर करना चाहता है और इस एनकाउंटर की सूचना सभी आरोपियों को हो जाती है।

मौत का खौफ किसे नहीं होता।

सबकी हालत पतली हो गयी है।

सभी फोन से एक–दूसरे के टच में रहते हैं।

चीता खुद को कानून का अच्छा जानकार भी समझता है।

इसी बीच चीता की दोस्तों से फोन पर बात होती है।

तो उसने सबको दिलासा दिया है कि मैं किसी को कुछ नहीं होने दूंगा...

मैं हूं ना...

चीता कहता है कि तुम लोग बस किसी तरह से लखनऊ

आ जाओ...

बाकी मैं सब देख लूंगा।

तुम लोग डरो मत!

मैं किसी हाल में एनकाउंटर नहीं होने दूंगा।

कानून तो मैं भी जानता हूं।

रजत और चीता की फोन पर बात होती है।

रजत रात को ही सभी साथियों के साथ लखनऊ

आ जाता है।

ऐसी मु कल हालत में चतुर–चालाक चीता को एक आइडिया सूझता है।

चीता ने कुछ मीडिया संस्थान में फोन किया और सभी आरोपियों को लेकर एक एनजीओ के ऑफिस में पहुंच जाता है।

जब तक पुलिस आती है तब तक आरोपियों की प्रेसवार्ता हो जाती है।

सभी आरोपी कहते हैं कि भाई की हत्या का बदला लिया गया है।

हम लोगों को कोई अफसोस नहीं है...

हम सरेंडर करने को तैयार हैं..

तभी पुलिस पहुंच जाती है और सभी आरोपियों को हिरासत में ले लेती है।

चीता जोर–जोर से पुलिस के सामने चिल्लाता है कि....

मेरे दोस्तों ने भाई की हत्या का बदला लिया है, कोई गुनाह नहीं किया है।

पुलिस सभी आरोपियों को कोर्ट में पे ा करती है और सभी की रिमांड लेती है।

इधर, पुलिस महकमे का एक बड़ा अधिकारी चीते की इस चाल से खार खाया हुआ है। इतनी बड़ी वारदात और पुलिस को भनक तक नहीं लगी।

राजधानी में सभी आरोपियों का मीडिया के सामने आत्मसमर्पण भी हो गया।

प्रेसवार्ता में बाकायदा चीता ने कहा कि अपने भाई–बाप का बदला लेना कोई गुनाह नहीं है।

इन सब हरकतों का अंजाम यह होता है कि उसी रात चीता और उसके अजीज अजय सिंह को एसटीएफ उठा लेती है।

पूरी रात पुलिस दोनों की खातिरदारी करती है।

थर्ड डिग्री टार्चर करती है।

इस टार्चर को चीता सहन नहीं कर पाता है और पुलिस के सामने टूट जाता है।

फिर चीता पुलिस को बताता है कि...

वारदात के पहले ये सारे आरोपी उसके यहां रूके जरूर थे...

लेकिन इस हत्या में ना मैं भाामिल हूं. ना मेरा दोस्त अजय।

पुलिस ने सर्विलांस से सारे रिकॉर्ड जोड़ लिए हैं।

सभी की आपस में बातचीत हुई थी।

ये सारे सबूत पुलिस ने बाकायदा इकठ्ठा कर लिए हैं।

अगली सुबह अखबार की पहले पेज की खबर बनती है कि...

पूर्व एमएलए हत्याकांड का मास्टर माइंड चीता अपने साथियों के साथ दबोचा गया।

पुलिस ने सभी आरोपियों को जेल भेज दिया।

चीता की अच्छी खासी दौड़ती जिंदगी में भूचाल आ गया।

कोचिंग संस्थान बंद हो गया।

प्र ाासन ने बिजली कटवा दी।

जहां रो ानी की चमक थी कभी वहां अब बस एक दिया जलता है।

वहीं चीता का छोटा भाई अब कोचिंग की बची हुई जिम्मेदारी संभालने की कोि ा करता है और साथ में चीता के मुकदमें को भी।

चीता के एक पड़ोसी हैं जो कि भाहर के एक नामी वकील हैं।

चीता उनको अपना केस लड़ने को कहता है।

वकील साहब और चीता की फोन पर बातचीत हो जाती है।

जेल में चीता फोन की व्यवस्था बना लेता है।

वकील साहब चीता को दिलासा देते हैं कि सबसे पहले बेल तुम्हारी होगी।

चीता अपने पैतरेबाजी से जेल में भी मास्टरी करने लगता है।

तमाम कैदियों को कानूनी सलाह देता है।

टाइम पास के लिए कुछ कानून की किताबें मंगवाता है और वही किताबें पढ़कर चीता खुद को तीस मार खां समझने लगता है।

कैदियों को जमानत करवाने का कानून बताता है और जब कोई पूछता है कि आप कब बाहर निकल रहे हो जेल से...

तो चीता बड़े ही भाातिर अंदाज में कहता है...

मैं तो बस जेल का मजा ले रहा हूं।

जब चाहूंगा तब जमानत करा लूंगा।

इस बीच चीता की जहां भाादी की बात चल रही थी, वहां से भी लड़की के घरवालों का कई बार फोन आता है।

लड़की के घरवाले चीता को फोन करते हैं और रि ता आगे बढ़ाने की बात कहते हैं।

जितनी बार फोन पर लड़की के घरवालों से चीता की बात होती है तो चीता कहता है कि मैं एक खास डिप्लोमा करने के लिए तमिलनाडु आ गया हूं।

मैं यहां से जब आऊंगा तब फोन करूंगा।

चीता लड़की के मामा को डिप्लोमा की बात बताकर निपटा देता है और लड़की से रात–रातभर बातें करता है।

उसको अपनी रसभरी बातों में उलझाएं रखता है।

इसी दौरान एक दिन लड़की के मामा चीता के गांव पहुंच जाते हैं।

गांव में घुसते ही उनको वो बिचौलिया मिल जाता है जिसने लड़की के मामा को चीता का रि ता बताया था।

लड़की के मामा बिचौलिए से कुछ पूछ पाते...

इससे पहले बिचौलिया उनको एक पेड़ के नीचै बैठाता है और चीता की पूरी कहानी बयां कर देता है।

बिचौलिया लड़की के मामा को बताता है कि...

चीता हत्या के मामले में महीनों से जेल में हैं।

और उस पर हत्या का मुकदमा चल रहा है।

आप रि ता तोड़ दीजिए...

बिचौलिए की बात सुनकर लड़की के मामा सन्न रह जाते है।

और वो वहीं से अपने घर लौट आते हैं।

घर पहुंच कर सारी बातें घरवालों को बताते हैं।

ये सारी सच्चाई सुनकर लड़की पूरा दिन रोती रहती है और बिना खाए–पिए अपनी किस्मत को कोसती है।

फिर हिम्मत करके चीता को फोन लगाती है...

और चीता से पूछती है कि तुमने मुझसे झूठ क्यों बोला?

तुम तो मुझसे कह रहे थे कि तुम तमिलनाडु में डिप्लोमा कर रहे हो...

जबकि पिछले कई महीनों से तुम जेल में हो।

तुम अगर इतना बड़ा झूठ ना बोलते तो भाायद मैं भाादी तुम्ही से करती।

चीता लड़की से कहता है...

सुनो मेरी बात सुनो!

जेल तो गांधी भी गए थे

और फिर मेरे उपर तो फर्जी आरोप लगा है।

मैं बहुत जल्द ही जेल से रिहा हो जाऊंगा और मुकदमे से भी बरी हो जाऊंगा।

लड़की जोर से चीता को डांटते हुए, चुप हो जाओ,

झूठे कहीं के आज के बाद मुझे फोन करने की हिम्मत मत करना नहीं तो जेल में घुसकर तुमको पीटूंगी।

यह कहकर लड़की फोन काट देती है।

इस तरह से चीता का रि ता झूठ से रिसते–रिसते रिस गया, यानी की खत्म हो गया।

तकरीबन पांच–छह महीने जेल में गुजर चुके हैं।

अब चीता को जेल कैद जैसी लगने लगी है।

वह सबके सामने दिखावे में तो जीता है मगर कभी बाथरूम में तो कभी कंबल में मुंह छिपाकर बहुत रोता है।

हां मगर बहादुरी ये है कि... रोने की आवाज ना कभी कंबल से बाहर आती है ना बाथरूम से।

एक दिन परे ाान होकर चीता अपने वकील मित्र को फोन करता है।

चीता उनसे पूछता है कि....

क्या हो रहा है?

मेरी जमानत का।

आप जमानत क्यों नहीं करवा पा रहे हैं?

आप तो भाहर के नामचीन वकील हो,

ना जाने कितने लोगों को सेम डे जमानत करवा दिए हो।

चीता के वकील मित्र चीता को समझाते हैं...

आपका मामला हाईप्रोफाइल है..

पॉलिटकल एंगल है।

थोड़ा सा इंतजार कर लो,

जिस दिन जमानत की अर्जी लगाऊंगा उसी दिन जमानत करवा दूंगा।

दिलासे का यह खेल महीनों तक चलता रहा।

डेट पर डेट से परे ाान चीता का मन अब घायल हो चुका है।

उसका सब्र अब टूटा नहीं बल्कि बिखर गया है।

अब उसको यह डर सताने लगा है कि वह अब भाायद कभी जेल से बाहर निकल ही ना पाए।

वह फोन पर कभी कभी बात करते हुए रोने लगता है और भाई से पूछता है कि मैं बाहर कब आऊंगा।

छोटा भाई उसको ढांढस बंधाता है और कहता है कि वकील साहब से बात हुई है मेरी। वो कह रहे थे कि इस महीने, हर हाल में जमानत करा दूंगा।

चीता का छोटा भाई अच्छा भाई होने के साथ–साथ एक नेक इंसान भी है।

जितना वह कर सकता था उसने पूरे तन–मन से चीता के लिए किया।

इस दौरान चीता के भाई को अकेला देख उसका दोस्त दीपू भी कोचिंग में उसके साथ रहने लगता है।

फिर कुछ दिन बाद चीता के दोस्त पिंटू और मोहन भी कोचिंग पर आ जाते हैं।

थोड़ी सी रौनक भी कोचिंग में लौट आती है।

मोहन और पिंटू चीता के भाई को परे ाान देखकर बहुत दुखी होते हैं।

एक दिन मोहन और पिंटू आपस में बात करते हैं कि...

चीता जितनी दफा अपनी स्मार्टनेस और फिटनेस के बारे में पूछता था।

उससे कहीं जाता उसका छोटा भाई चीता की जमानत के बारे में लोगों से पूछता है।

उधर मां का रो–रो कर बुरा हाल है।

पिता को तो भाराब ने बिजी कर रखा है।

फिलहाल एक साल के बाद चीता और अजय को जमानत मिलती है।

चीता लखनऊ कोचिंग पर फिर एक बार पहुंचता है।

वहीं अजय अपनी नई जिंदगी जीना भाुरू करता है।

आगे क्या होता चीता की जिंदगी में?...

उससे पहले चीता की एक छोटी सी प्रेम कहानी जानना जरूरी है जिसे अभी तक चीता के अलावा कोई नहीं जानता है..

चीता बहुत प्रैक्टिकल आदमी है।

उसे प्यार–व्यार में कोई भरोसा नहीं है।

यह जेल जाने से पहले की बात है।

चीता को एक भोरनी नायरा मिल जाती है।

जो चीता के संस्थान में कभी कदार पढ़ने के बहाने आती थी।

या यूं कह लें कि इस रोमांस की जानकारी किसी को भी कानो–कान भनक तक नहीं है। पर नायरा चीता के प्यार में बहुत ही सीरियस है।

चीता भी पूरा चांस मारते हैं।

जेल के पहले नायरा के साथ खूब रोमांस करते हैं।

मूवी, भॉपिंग सब चलता था।

चीता ने प्यार की कसमें भी नायरा के साथ खाईं हैं।

और भाादी का वादा भी किया था।

मगर चीता के इन कारनामों को कोई और नहीं जानता था।

जेल से आने के बाद वह कसम खाते हैं कि वह कभी लड़कियों के नजदीक नहीं जाएगा। और फोन पर भी किसी से बात नहीं करेगा।

कुछ दिनों तक चीता ने यही रूटीन अपनाया।

उसको देखकर एक बारगी लगले लगा कि अब भाायद चीता बदल गया है।

पर जैसे ही हालात कुछ सही हुए...

चीता फिर से पलटी मारता है।

और यह साबित करता है कि... कुत्ते की दुम कभी सीधी नहीं होती।

लड़कियों से बात करना, जिम जाना, चौराहे पर गप्पेबाजी करना सब भ्रुरू कर देता है। धीरे–धीरे करके सारी पुरानी आदतें फिर से जीने लगता है।

एक नई आदत यह है कि अब वह भाराब दिन में भी पीना भ्रुरू कर चुका है।

उधर भोरनी नायरा से चीता का मिलना–जुलना फिर चालू हो गया है।

दोनों कुछ दिन बाहर मिलते हैं फिर अपने कमरे पर ही मिलना–मिलना भ्रुरू कर देते हैं।

अब नायरा, चीता से हर हाल भ्रादी करना चाहती है।

मगर मामले में जो पेंच फंसा है वह यह है कि चीता का दिल नायरा से अब भर चुका है। चीता, नायरा से, ना दिल से जुड़ा है, ना ही भ्रादी करना चाहता है।

कुछ दिन तक चीता अपने दिमाग से खेलता रहा और नायरा की भावनाओं से भी।

रोज भ्रादी की बात को टाल जाता।

नायरा को भी चीता के बर्ताव से यकीन हो चुका था कि चीता उसके साथ टाइम पास कर रहा है।

वह भी गलत इरादे से।

नायरा और चीता के रि ते को नायरा के घरवाले बहुत अच्छी तरीके से जानते हैं।

उनको पता है कि नायरा और चीता की भ्रादी होने वाली है।

रोज–रोज भाादी की बात टालने से आजिज आकर एक रोज नायरा, चीता और अपने अंतरंग रि ते को फोन में रिकॉर्ड कर लेती है।

उसके अगले दिन नायरा, चीता से कहती है कि हम भाादी कब करेंगे।

मेरे घर से मेरे उपर बहुत प्रे ार है।

अब मैं और टाल नहीं पाउंगी।

चीता भाादी की बात को हल्के मोड में लेते हुए, अरे डार्लिंग!..

टें ान क्यों लेती हो?

मैं हूं ना, भाादी–वादी कर लेंगे कभी...

इस बार चीता की बात का नायरा पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा।

नायरा मूड बनाकर आयी थी।

उसने फिर दबाव देकर चीता से पूछा कि हां या ना में बताओं।

भाादी की डेट तय करो, वरना मैं थाने में जाऊंगी।

यह बात सुनकर चीता गुस्से में लाल हो गया और तमतमा कर कहता है...

तुम्हें जहां जाना हो जाओ!

जितनी भी कोर्ट कचहरी करनी हो कर लो..

मैं सब देख कर बैठा हूं, मेरा कोई कुछ नहीं कर पाएगा।

नायरा, चीता की बातों से आहत होकर रोते हुए अपने घर चली जाती है।

घर पहुंच कर नायरा घरवालों को सारी बात बताती है।

इधर, चीता रात में पैग पर पैग लगाता है और सो जाता है।

वह अपनी और नायरा की बात को किसी से जाहिर नहीं करता।

नायरा और उसके बीच कितना गंभीर मामला है।

इसको लेकर उसके दिमाग में कुछ खास हलचल नहीं है।

नायरा के परिवारवालों की माली हालत बहुत अच्छी नहीं हैं।

उसके पिता और भाई रोज कमाने–खाने का व्यवसाय करते हैं।

उनको भी अपनी बेटी नायरा और अपने होने वाले दामाद से बहुत उम्मीदें हैं।

ये उम्मीद खुद चीता ने ही अपने बड़बोले पन से जगाई हैं।

नायरा के घरवालों को यकीन था कि चीता उनकी बेटी को बहुत खु ा रखेगा।

नायरा को रोता देखकर, नायरा के पिता और उसका भाई सुबह का इंतजार कर रहे हैं। कि कब सुबह हो और वो कब चीता से दो–दो हाथ करें।

नायरा के पिता... नायरा को समझाते हैं

बेटी तुम परे ाान मत हो..

मैं तुम्हारी जिंदगी बर्बाद नहीं होने दूंगा।

मैं हर हाल में तुम्हारी भाादी चीता से करवाऊंगा।

सुबह होते ही नायरा अपने घरवालों के साथ चीता के घर पर आ धमकती है।

नायरा का भाई टैक्सी चलाता है तो पूरा परिवार टैक्सी में भरकर चीता के घर आ गया। वह भी लाठी–डंडों के साथ कि आज मामला रफा–दफा करना है।

चीता और नायरा के परिवारवालों में कहासुनी होती है।

कहासुनी हाथापाई में तब्दील हो जाती है।

तभी मोहन और पिंटू मामले को संभालते हैं और नायरा को समझाया कि ऐसे बात खराब होगी।

आप कल अकेले आओ फिर बात होगी।

नायरा को पिंटू और मोहन की बात समझ आ जाती है।

नायरा अपने भाई और पिता को समझा–बुझा कर घर वापस लेकर चली जाती है।

फोन पर चीता और नायरा बात करते हैं।

चीता फिर वादा करता है भाादी का।

अब प्यार की लच्छेदार बातें करके नायरा को भाादी के मुद्दे से कुछ दिन टरका देता है।

दोनों फिर बाहर घूमना–टहलना चालू रखते हैं।

इस बीच जब भी नायरा चीता से भाादी की बात करती है तो चीता कहता है कि घरवालों से बात चल रही है।

घरवाले मान नहीं रहे हैं.. मैं जल्द ही घरवालों को मना लूंगा।

यही बहाना बना कर चीता भाादी को टालता रहता है।

इसी तरह की टालम–टोल महीने भर चलती रहती है।

अब नायरा जान चुकी है कि बात सीधे से नहीं बनेगी।

उंगली टेढ़ी करनी पड़ेगी...

अगले दिन नायरा एक वकील के साथ चीता के घर आती है।

और चीता से भाादी की बात करती है..

वकील और चीता में बहस होती है।

फिर नायरा, चीता को अपने अंतरंग वीडियो की बात बताती है जो उसने अपने फोन में चुपके से रिकॉर्ड कर रखा है..

और कहती है कि तुम्हारे ऊपर रेप का मुकदमा लगवाऊंगी..

तुमने मेरा यौन भाोशण किया है..

मुझे धोखे में रखा है।

भाादी का झांसा देकर मेरे साथ टाइम पास किया है।

तुम फिर जेल जाओगे।

नायरा की यह बात सुनकर चीता को सदमा लगता है।

चूंकि चीता जेल काटकर आया है तो उसको उस जहन्नुम का पता चल चुका है।

वह दोबारा जेल नहीं जानता चाहता।

जेल के नाम से चीता की रूह कांप उठी है।

चीता गिरगिट की तरह रंग बदलने में माहिर है।

चीता अपना रंग बदलना भाुरू भी करता है।

चीता को प्यार और लड़की दोनों पर भरोसा नहीं है।

यह उसका पुराना डॉयलॉग है और वह इस किरदार को बखूबी जीता भी है।

मगर नायरा की धमकी से चीता हिल जाता है और वह भाादी के लिए हां कर देता है।

अगली सुबह हल्की धूप खिली थी।

सर्दी का मौसम है।

रोड पर सन्नाटा था।

चूंकि भाहर में देर तक सोने का कल्चर है इसीलिए चीता भी गहरी नींद में सो रहा है।

इसी बीच नायरा, चीता के घर पहुंचती है और जोर–जोर से दरवाजे को पीटने लगती है। दरवाजा खोलो नहीं तो दरवाजा तोड़ दूंगी।

तेज आवाज में नायरा चिल्लाती है कि... कहां गए सब लोग?

तभी भाोर सुनकर चीता का छोटा भाई भाग कर दरवाजा खोलता है।

क्या है? कौन हैं आप? और क्यों चिल्ला रहीं हैं?

नायरा चीता के छोटे भाई से कहती है कि जाकर अपने भाई से पूछों कि, कौन हूं मैं?

कहां छुपा है वो?

खुद चैन की नींद सो रहा है, बुलाओ उसे।

इस चिल्लाहट से चीता की नींद टूटती है।

चीता दरवाजे की तरफ आता है।

वहां भोरनी को देखकर सियार बन जाता है।

मौके की नजाकत को भांपते हुए चीता भोरनी को अंदर आने को बोलता है और अपने भाई को सामान लाने के लिए भॉप पर भेज देता है।

अंदर आते ही नायरा ने फिर से वही सवाल किया कि भाादी करोगे कि नहीं?

चीता मामले को समझते हुए हां बोल देता है।

मैं तैयार हूं..

नायरा... कब करोगे?

चीता, जब कहो तुम?

अब दोनों इस कदर भाांत हो गए कि जैसे कोई बात ही नहीं हुई है।

इस दौरान छोटा भाई सामान लेकर वापस आता है।

सब कुछ भाांत देखकर कुछ समझ नहीं पाता है और चीता से पूछता है कि आखिर बात क्या है?

मगर चीता उसके यह कहकर चुप करा देता है कि अपना काम करो, मैं सब संभाल लूंगा। तुम मेरे मामले में दखल न दो।

अगली सुबह चीता एक बैग और कुछ जरूरी डाक्यूमेंट लेकर बिना किस को कुछ बताएं बाहर निकल जाता है।

उधर नायरा भी अपने वकील के साथ भाइयों को लेकर कोर्ट पहुंच जाती है।

भाादी की सारी तैयारी हो चुकी थी।

दोनों कोर्ट मैरिज कर लेते हैं।

भाम को चीता, नायरा के साथ घर आता तो सारी बात अपने छोटे भाई को बताता है।

छोटा भाई घर पर फोन करके मां को बता देता है कि चीता ने भादी कर ली है।

कोर्ट मैरिज की बात चीता के पूरे गांव में बीमारी की तरह फैल जाती है।

चीता के घरवाले मान सम्मान का हवाला देकर चीता को गांव आने से मना कर देते हैं।

अब चीता अपनी पत्नी के साथ भाहर में ही रहने लगता है।

चीता का छोटा भाई वापस गांव चला जाता है।

चीता की जिंदगी कुछ दिन सही ढर्रे पर चली... पर एक सदमा चीता का इंतजार कर रहा था।

अचानक एक दिन पुलिस चीता के घर आ धमकती है और उसे अपने ही दोस्त अजय की हत्या के मामले में पूछताछ के लिए ले जाती है।

चीता खुद अजय की हत्या की खबर सुनकर चौंक जाता है।

क्योंकि दोनों ने बहुत समय साथ गुजारा था।

हालांकि पुलिस को अजय की हत्या के मामले में चीता के खिलाफ कोई खास सबूत हाथ नहीं लगा है।

इसलिए पुलिस चीता को छोड़ देती है।

उधर अजय के परिवार ने उसकी हत्या के मामले में उसकी पत्नी सिया और उसके ससुर के खिलाफ हत्या का मुकदमा दर्ज कर लिया है।

उधर, हालात को देखते हुए पुलिस ने उसकी पत्नी और ससुर को जेल भेज दिया।

हालांकि अजय की हत्या की जांच कर रहे पुलिस इंस्पेक्टर ने अपनी पूरी सर्विस के दौरान कोई भी अच्छा काम नहीं किया है।

अजय की हत्या में भी इंस्पेक्टर ने किसी तरह से मामले को टरकाने के लिए बिना तहकीकात के अजय की पत्नी और ससुर को जेल भेज दिया है। इस बात को इंस्पेक्टर बखूबी जानता है।

इंस्पेक्टर रात में अपने घर आता है।

घर पर वह अपने इकलौते बेटे के साथ रहता है।

उसकी पत्नी उसकी गलत हरकत की वजह से पहले ही छोड़ चुकी थी।

टीवी पर हत्या की खबर सुनकर इंस्पेक्टर का बेटा अपने पिता से बोलता है कि डैडी क्या सच में आपने हत्यारों को जेल भेजा है? या बेकसूर को..

बेटे की ये बात इंस्पेक्टर को तीर की तरह चुभ जाती है।

इंस्पेक्टर, बेटे से वादा करता है कि मैने अभी तक कोई काम सही नहीं किया है।

लेकिन इस मामले में ज्यादा दिन बेकसूर को जेल में नहीं रहने देंगे।

असली आरोपी को जल्द ही जेल भेजेंगे।

मैं बेटे की नजर में अब गलत नहीं होना चाहता हूं।

इंस्पेक्टर ये बातें अपने बेटे को बोलकर अजय की हत्या की जांच अपने तरीके से जारी रखता है।

इधर, अजय की हत्या होने के बाद चीता को कुछ नए लोग मिलते हैं।

जिसमें एक का नाम रा ि ाद है और दूसरा विनय प्रताप सिंह। ये दोनों हर बुरी लत से परिपूर्ण हैं।

इसी बीच चीता के परिवार में बच्ची पैदा होती है।

नायरा ने बेटी को जन्म दिया है।

बेटी होने पर चीता बहुत खु ा था।

उसने पूरे अस्पताल में मिठाई बंटवायी और अस्पताल के सारे स्टाफ को बख्शीस देता है।

बेटी के आने से चीता की जिंदगी एक बार फिर पटरी पर लौटती नजर आती है।

चीता के मां–बाप को बेटी होने का पता चलता है।

छोटा भाई मां और पिता को लेकर अस्पताल आता है।

नायरा और बच्ची अस्पताल से डिस्चार्ज होकर घर आ जाते हैं।

अब चीता की मां भी चीता के साथ रह रही हैं।

जबकि पिता जी गांव वापस चले गए हैं

जबकि छोटे भाई को जॉब करने के लिए चीता बाहर भेज देता है।

सबकुछ सही चल रहा था।

मगर चीता की संगत और लत दिन प्रतिदिन बिगड़ती जा रही थी।

चूंकि कोचिंग भी अब बंद हो चुकी है और अजय की हत्या के बाद कोई काम भी नहीं हो पा रहा है, तो पैसों की किल्लत फिर से भुरू हो जाती है।

ऐसे हालात में जिंदगी खिंचखिंचाकर कुछ साल चलती है।

तभी फिर चीता की पत्नी नायरा एक और बेटी को जन्म देती है।

खैर चीता को बेटी और बेटे में कोई फर्क नहीं है।

वह बिटिया के जन्म से खु ा होता है।

धूमधाम से बिटिया के आने की खु ाी मनाता है।

जिम्मेदारियां अब और बढ़ गयी हैं।

मगर फिर भी चीता संजीदा नहीं हुआ है।

उसकी हरकतें वही हैं बल्कि और भी ज्यादा बढ़ गयी हैं।

उसके नये दोस्त उसकी जिंदगी में भाराब की तरह घुल गए हैं।

नए दोस्तों में विनय सिंह लड़की का भौकीन है, उसकी पत्नी सरकारी ऑफिसर है मगर उसका भी पत्नी से रि ता ठीक नहीं है।

फिर भी जरूरत पड़ने पर विनय सिंह बहला–फुसला कर पत्नी से पैसे ले ही लेता है। विनय सिंह ने अपनी पत्नी का चेक अपने कई बकायदारों को भी दे रखा है।

जो कई दफे बाउंस भी हुए हैं।

पत्नी की नौकरी भी जाते–जाते किसी तरह से बची है।

खुद पत्नी से दूर रहता है।

पत्नी यह भी जानती है कि विनय किसी लड़की के साथ रि ते में है और चुपके से दोनों ने भाादी भी कर चुके हैं।

चीता का दूसरा नया दोस्त रा ि ाद खान है जो फौज का भगोड़ा है।

उसके उपर कई धोखाधड़ी, जालसाजी और हत्या के प्रयास के मुकदमें दर्ज हैं।

वो लड़कियों की दलाली करता है।

पैसे के अलावा उसका और दूसरा कोई इमान नहीं है।

चीता,रा ि ाद और विनय प्रताप तीनों में अब मेल मिलाप बढ़ता है।

रोज भाराब– ाबाब और एक नई धोखाधड़ी की प्लानिंग चलती है।

प्लान बनता है ठगी का।

किसी भारीफ को फंसा कर पैसा ऐंठने का।

इन कामों में कुछ में सफलता भी मिलती है और कुछ में नहीं।

वक्त के साथ चीता की हालत और भी खराब होती चली गयी।

नायरा अब जान चुकी थी कि अजय की मौत के बाद चीता फिर उसी दलदल में धंस चुका है जहां से उसका लौटना मु कल है।

चीजे जैसे–तैसे चलती रहीं।

वक्त गुजरता रहा, हालात बिगड़ते रहे।

चीता की एक बेटी 12 साल और दूसरी दस साल की हो गयी है।

रा ाद और विनय प्रताप का चीता के घर पर आना–जाना अब रोज का हो गया है।

चीता का घर विनय के लिए ऐया ाी का अड्डा है।

दोनों आधी रात तक न ो में धुत चीता के घर पड़े रहते हैं।

इसी दौरान रा ाद की नजर चीता की बच्चियों पर पड़ती है।

रा ाद अब मौके की तला ा में है। जबकि विनय प्रताप को उसकी दूसरी बीवी ने मारपीट के मामले में जेल भिजवा दिया है।

चीता और रा ाद हर भाम भाराब में डूब जाते हैं।

चीता के पास कोई काम नहीं है सिवाय भाराब पीने के अलावा।

उसे समझ नहीं आ रहा है कि क्या करना है?

वह कर्ज में पूरा डूब चुका है।

अगली सुबह रा ाद पूरे प्लान से आता है।

भाराब पीता है और मटन बनाना भाुरू कर देता है।

धीरे–धीरे भाम हो गयी है।

भाराब के कई दौर चले।

न ो में चीता बेसुध होने लगता है।

तभी रा ाद चीता की पत्नी को कुछ पैसे देकर उसे भॉपिंग करने के लिए भेज देता है। बेटियां घर पर ही रहती हैं।

भाराब का एक दौर फिर चलता है।

रा ाद तो तैयारी में था ही।

अब चीत को पिला–पिला कर एकदम बेहो ा कर देता है।

रा ाद लड़कियों के दलाल को पहले से ही सेट किए रहता है।

मौका देखकर वह फोन कर दलाल को चीता के घर बुला लेता है।

दलाल घर आते ही चीता की बेटियों को जबरदस्ती ले जाते हैं।

बेटियां चिल्लाती हैं...पापा–पापा बचाओ!

मम्मी कहां चली गयी तुम?

ये अंकल जबरदस्ती मुझे ले जा रहे हैं।

दलाल बेटियों को घसीटते हुए लेकर चला जाता है।

रा ाद भी वहां से फरार हो जाता है।

बेटियां, पापा–पापा चीखती–चिल्लाती रह गयीं लेकिन चीता को कुछ सुनाई नहीं दिया। भाराब के न ो ने उसे बहरा और अंधा कर दिया था।

इधर, चीता की पत्नी नायरा घर पहुंचती है तो चीजें बिखरी हुई मिलती हैं और बच्चियां भी घर पर नहीं है।

उसे किसी अनहोनी की आहट हो जाती है तो वह अपने मायकेवालों को फोन कर बुलाती है।

मायके वाले घर पर आते हैं।

सभी किसी तरह से पानी डालकर चीता को हो ा में लाने का प्रयास करते हैं।

चीता थोड़े हो ा में आता है तो नायरा, चीता से बच्चियों के बारे में पूछती है कि मेरी बच्चियां कहां हैं?

चीता किसी तरह से खुद को संभालते हुए रा ाद को फोन करता है पर उसका नंबर स्विच ऑफ आता है।

चीता समझ जाता है कि रा ाद ही उसकी बच्चियों को ले गया है।

चीता, नायरा से उसे बाथरूम ले जाने की बात कहता है।

नायरा उसको सहारा देकर बाथरूम तक ले जाती है।

चीता बाथरूम से पुलिस को फोन करता है और पूरी बात बताता है।

अब चीता को अपनी गलती का पूरा एहसास है।

वह बाथरूम में लगे कांच से आपने हाथ की नस काट लेता है।

काफी देर हो चुकी है।

बाथरूम से चीता निकला नहीं है।

इसी बीच पुलिस घर पर आ जाती है और चीता की पत्नी को सारी वारदात बताती है।

यह सब सुनकर नायरा, चीता की तरफ बाथरूम की ओर भागती है।

चूंकि बाथरूम का दरवाजा अंदर से बंद है...

इसलिए पुलिस भी किसी तरह से बाथरूम का दरवाजा तोड़कर खोलती है तो बाथरूम में चीता खून से लथपथ मिलता है।

पुलिस चीता को अस्पताल ले जाती है.

वहां डॉक्टर उसको बचा नहीं पाते।

ज्यादा खून बहने की वजह से चीता की मौत हो जाती है।

इधर, नायरा अपने बच्चों को ढूंढते–ढूंढते बेसुध हालत में रोड पर भागती है।

सभी से अपनी बेटियों के बारे में पूछती है पर कोई कुछ बता नहीं पाता है।

सड़क पर दौड़ती हुई नायरा एक गाड़ी की चपेट में आ जाती है।

हादसे के बाद वहां मौजूद लोग किसी तरह से नायरा को पास में ही एक अस्पता में भर्ती करा देते हैं जहां उसकी हालत गंभीर बनी हुई है।

उधर, पुलिस चीता का पोस्टमार्टम करा कर उसकी बॉडी उसके घरवालों को दे देती है। इन सबके बीच इंस्पेक्टर जो अजय की हत्या की जांच कर रहे थे वो नायरा से मिलने अस्पताल पहुंचते हैं।

नायरा हो ा में आती है और पुलिस को देखकर रोते हुए पूछती हैं कि मेरी बेटियों का कुछ पता चला?...

कि वो कहां हैं और कैसी हैं?

मुझे मेरी बच्चियों से मिलना है।

इंस्पेक्टर नायरा को हौसला देते हैं और बेटियों को जल्द ही तला ा करने का वादा करते हैं।

लेकिन नायरा के सामने एक भार्त रख देते हैं।

इंस्पेक्टर नायरा से कहता है कि...

मैं तुम्हारी बेटियों को तो ढूंढ कर तुम्हारे पास ले आऊंगा लेकिन तुम्हें सब सच बताना होगा कि तुमने अजय की हत्या क्यों की?

इंस्पेक्टर की बात सुनकर नायरा चौंक जाती है और पसीना–पसीना हो जाती है।

नायरा कोई जवाब नहीं देती है।

इंस्पेक्टर फिर कहता है कि देखो हमने तुम्हारे घर से एक जूता बरामद किया है। इस जूते की दूसरी जोड़ी हमें पहले ही अजय की हत्या वाली जगह पर मिल चुकी है।

फॉरेंसिक जांच में भी साबित हो गया है कि दोनों पैर के जूते एक ही आदमी के हैं...

और वो तुम्हारी है।

ये बात सुनकर नायरा रोने लगती है।

लेकिन बोलती कुछ नहीं।

इंस्पेक्टर फिर से नायरा से कहता है...

देखो तुम फंस चुंकी हो,

तुम्हारा सारा मामला एक्सपोज हो चुका है...

तुम्हारा पति भी नहीं रहा..

तुम्हारी बेटियां किस हाल में होंगी पता नहीं?

उनके लिए ही सब सच–सच बता दो।

हम भी वादा करते हैं कि तुम्हारी बेटियों को तला ा कर तुम्हारे पास ले आएंगे।

इंस्पेक्टर के आगे नायरा टूट गयी और उसने सब कुछ बताना भाुरू किया।

नायरा कहती है कि...

भाादी के बाद सब सही चल रहा था।

तभी चीता की दोस्ती अजय से हो गयी।

अजय लड़कियों का भाौकीन था।

भाराब और भाबाब की इस लत में उसने चीता को भी डुबो दिया।

चीता भी अजय के साथ हर बुरा काम करने लगा।

कई बार चीता से इस बात पर झगड़ा भी हुआ लेकिन अजय चीता को बहला–फुसला कर अपने साथ लेकर चला ही जाता था।

चीता ने मेरी एक भी बात न सुनी।

तभी एक दिन चीता जब भाराब के न ो में धुत सो रहा था तब मैने चीता के मोबाइल से अजय को एक मैसेज किया और पार्क के आगे वाले रास्ते पर मिलने को बोला।

अजय ने तुरंत आने की बात बोल दी।

मैंने हाथ में एक चापड़ लिया और दुपट्टे से उसे छिपा कर अजय से मिलने पहुंच गयी। अजय भी आ गया...

अजय मुझे देख कर चौंका कि चीता की जगह मैं कैसे?

इस पर मैंने बहाना बनाते हुए बोला कि... चीता ही मुझे साथ लेकर आया है।

उन्होंने मुझको पार्क में लाने के लिए भेजा है।

अजय किसी साजि ा से अंजान मेरे साथ पार्क की तरफ चलने लगा।

इसी बीच मैने मौका देखते ही पीछे से चापड़ से उसकी गर्दन पर वार कर दिया।

जब वह गिरा तो उसके सीने और सिर पर कई वार किए।

जिससे उसकी वहीं पर मौत हो गयी।

लेकिन ठीक उसी समय वहां एक गाड़ी आती दिखी तो मैं घबरा गयी और वहां से भाग गयी।

जिससे मेरे एक पैर का जूता वहीं छूट गया।

पुलिस नायरा को अस्पताल से अजय की हत्या के मामले में पकड़ती है और जेल भेज देती है।

उधर, अजय की हत्या के मामले का खुलासा होने के बाद उसकी पत्नी सिया और उसके पिता को कोर्ट से रिहा कर दिया जाता है।

इसी बीच एक दिन पुलिस जेल जाकर नायरा को बताती है कि उसकी बेटियां मिल गयी हैं...

वह चाहे तो उनसे मिल सकती है।

बच्चियां अब नायरा के परिवार के पास हैं।

इधर अजय की पत्नी जेल से रिहा होती हैं।

रिहा होकर वह घर ना जाकर सीधे जेल जाकर नायरा से मिलती है।

नायरा और सिया दोनों एक दूसरे को कुछ पल टकटकी लगाए देखती रहती हैं।

फिर बिना कुछ बोले एक–दूसरे के गले लग जाती हैं।

क्योंकि जेल में और भी मुलाकाती आएं तो उनके बीच दोनों अपनी बर्बादी के गम को ज्यादा देर तक छुपा नहीं पाती और फूट–फूट कर रोने लगती हैं।

इस बीच कुछ औरतें दोनों के गम में भारीक होने की कोि ा ा करती हैं।

मुलाकात में आयी ये औरतें सिया और नायरा से पूंछती हैं कि बहन क्या घटना हुई है तुम्हारे साथ?

नायरा और सिया जवाब देती हैं...

यह पूछों कि क्या नहीं हुआ है?

अब होने को कुछ बचा ही नहीं है और जो बचा है वह बचेगा भी नहीं।

नायरा की आपबीती सुनकर सिया एकदम सुन्न हो जाती है।

इस तरह की बातें सुनकर वहां मौजूद औरतों को कुछ भी मामला समझ नहीं आता है। मुलाकात का समय खत्म होता है।

फिर नायरा सिया से कहती है, बहन मेरे बच्चों का ख्याल रखना और हो सके तो उनका पालन–पोशण भी तुम ही करना।

धीरे–धीरे इतना प्यार देना कि वो मुझे भूल जाएं।

उनकी असली मां तुम बन जाना।

क्योंकि मैं नहीं चाहती कि मेरे बच्चों को मेरे कातिल होने की बात पता चले।

उन्हें इस नरक की दुनिया से लेकर कहीं दूर चली जाना।

जाओ बहन मेरी बात को गौर से सोचना।

सिया गीली पलकें झपकाते हुए, बिल्कुल! बहन मैं अच्छी मां बनूंगी।

सिया जेल से मुलाकात करके घर आती है और पूरी रात दीवार पर टंगी घड़ी की टकटक की आवाज सुनती रहती है।

पता नहीं कौन से ख्यालों में खोई रही रात भर।

उसे जेल से बरी होने की कोई खु ाी भी नहीं है।

पूरी रात उसकी बेचैनी में गुजरी।

सुबह होती है, अखबार वाला सिया के गेट पर अखबार फेंक कर चला जाता है।

क्योंकि सिया जग रही थी तो गेट पर जाकर अखबार उठा लेती है और उसमे एक कॉलम में रिहाई की खबर पढ़ती है।

तभी उसके पापा आ जाते हैं।

सुबह का वक्त है।

साफ हवा भारीर को छू रही है।

लोग नई उर्जा का एहसास कर रहे हैं।

सिया के पिता भी एक लंबी सांस खीचते हुए सिया से कहते हैं कि बेटा जो हुआ उसे तो मैं बदल नहीं सकता...

वो तुम्हारा नसीब था,

तुम्हारा अतीत था।

पर अभी तुम्हारी पूरी जिंदगी पड़ी है।

चलो यहां से दूसरे भाहर चलते हैं।

जहां कोई हमे जानता नहीं।

एक नई पहचान के साथ नई जिंदगी जीते हैं।

सिया भरी–भरी आंखों से, हां पापा इस नरक भरी दुनिया को छोड़ना है पर अभी थोड़ा वक्त लगेगा।

पापा मुझे कुछ जरूरी काम है फिर यहां ये चल चलते हैं और कभी लौट कर नहीं आएंगे। यह सुनकर सिया के पापा की आंख भर आती है।

वह सिया को गले लगाते हैं और अखबार लेकर अपने कमरे में चले जाते हैं।

सिया सुबह की नित्य क्रिया करके सबसे पहले नायरा के देवर मनीश को फोन करती है। मनीश के फोन की घंटी बजती है. ..

मनीश फोन उठाकर, हैलो! हैलो!

सिया थोड़ा ठहर कर कुछ सेकेंड के बाद बोलती है कि क्या आप नायरा के देवर बोल रहे हैं?

मनीश, हां पर आप कौन?

सिया थोड़ा सा सकपकाते हुए, मैं सिया,नायरा की दोस्त हूं।

मैं गयी थी नायरा से मुलाकात करने।

वहां उसने मुझे आपके के बारे में बताया।

मनीश, हां तो क्या बात करनी है आपको मुझसे?

सिया, नायरा ने मुझको बच्चों को पालने के लिए कहा है।

उसने कहा है कि मैं आपसे बात कर लूं, आप बच्चों को मेरे पास पहुंचा देंगे।

मनीश, सिया की बात पर झल्लाते हुए...

फोन रखो मुझे बकवास नहीं सुननी है।

सिया, रूकिए फोन मत काटिएगा प्लीज!

मेरी पूरी बात सुनिए! आपको अच्चों की कसम।

क्या आप मासूम बच्चों को मां का प्यार दे पाएंगे?

उनकी अच्छी परवरि ा कर पाएंगे?

इस नरक की दुनिया से दूर ले जा पाएंगे?

सोचो जब वो बड़े होकर जानेंगे कि उनकी मां एक कातिल है, उनके पिता के साथ हादसा हुआ है वो भी इस तरह का तो उन मासूमों पर क्या गुजरेगी?

क्या आप नहीं चाहोगे कि बच्चे अच्छी जिंदगी जिए वो पढ़े और आगे बढ़े?

सिया की बातें भाायद उस वक्त मनीश को समझ नहीं आयी।

मनीश गुस्से में फोन काट देता है।

सिया मायूस होकर जेल में नायरा से मिलने की अर्जी लगाती है।

सुबह होती है।

सिया उठकर खाने के लिए कुछ चीजे बनाती है और टिफिन पैक करती है फिर नायरा से मिलने जेल निकल जाती है।

सभी मुलाकाती जेल में अपने–अपने सगी संबंधी से मिल रहे हैं।

अपनी आप बीती कह रहे हैं और जेल से छूटने की जुगत में लगे हैं।

नायरा की सिया से मुलाकात होती है।

दोनों एक दूसरे को गले लगाते हैं।

नम आंखों से सिया, नायरा को टिफिन देती है और उससे जमानत की बात करती है।

नायरा, नहीं...नहीं मुझे जमानत नहीं चाहिए बहन...

तुम बस मेरी बच्चियों की मां बन जाओं।

बाकी मुझे कुछ नहीं चाहिए।

सिया, ठीक है बहन, तुम जैसा चाहोगी, वैसा होगा।

मैने मनीश को फोन किया था।

काफी देर तक बच्चों को लेकर बात भी हुई थी।

मगर मनीश काफी गुस्से में थे, उन्होंने मेरा फोन काट दिया।

अब नायरा, सिया से कहती है कि सिया तुम उस गार्ड को देख रही हो।

जो पेड़ के पास खड़ा है।

सिया, हां...हां, बिल्कुल मैं उसे देख रही हूं।

नायरा तो उसके पास जाओ और उसे कुछ पैसे दे देना और बोलना की मुझे एक फोन कॉल करनी है।

सिया, नायरा से, किससे बात करेंगी आप?

नायरा, मनीश से।

सिया, नायरा की बात समझ जाती है और गार्ड के पास जाती है।

गार्ड को कुछ पैसे देती है और फोन लेकर नायरा व मनीश की बात कराती है।

नायरा, मनीश को फोन करती है।

मनीश फोन उठाता है।

मनीश, हैलो!

नायरा, हैलो!

मनीश मैं जो कह रही हूं उसे ध्यान से सुनो।

मेरे पास ज्यादा वक्त नहीं है।

मेरे जिंदा रहते मेरे बच्चे सुरक्षित हाथों में रहें और मेरी छाया से दूर रहें।

यही मेरी अंतिम इच्छा है।

यह बात कहकर नायरा रोने लगती है।

मनीश, नायरा की बात को टाल न सका।

मनीश, ठीक है भाभी, जैसा आप कह रही हैं, वैसा ही होगा।

बच्चों से बढ़कर कुछ भी नहीं है।

अब नायरा और सिया थोड़ा सा इतिमिनान से बात करते हैं।

नायरा, सिया से अपनी बच्चियों के अपहरण की बात बताती है।

और किस हालात में चीता की मौत हुई थी, उस दर्द को भी बयां करती है।

साथ ही चीता की मौत के पीछे विनय प्रताप और रा ाद खान ने किस तरह से साजि ा रची थी ये बात भी सिया को बताती है।

अब मुलाकात का समय तो खत्म हो चुका था मगर नायरा का दर्द नहीं।

नायरा की तकलीफ सुनकर सिया अपना सुधबुध खो देती है।

फिर नायरा से विदा लेकर सिया घर आती है।

इधर सिया के पापा, सिया का इंतजार कर रहे हैं।

सिया घर पहुंचती है।

पापा सिया से पूछते हैं?

कहा गए थे बेटा?

पूरा दिन तुम्हारा इंतजार करता रहा।

सिया, पापा दोस्त से मिलनी गयी थी।

पापा, ठीक है बेटा पर बता तो दिया करो, तुम्हारी बहुत फिक्र हो रही थी।

सिया, हां पापा अगली बार से बता कर जाऊंगी।

अगले रोज नायरा का देवर मनीश, सिया को फोन करता है।

सिया, मनीश को घर का पता बताती है।

मनीश बच्चों को लेकर सिया के घर पहुंचता है।

सिया बच्चियों को देखकर खु ा हो जाती है।

उनको गले से गलाती है।

उनको दुलार करती है।

मानो सिया को फिर से जीने का मकसद मिल गया हो।

मनीश को चाय–पानी पिलाती है।

उसके बाद मनीश बच्चों को छोड़कर वापस अपने गांव लौट जाता है।

सिया बच्चों में खूब म ागूल हो जाती है।

नहलाना, पढ़ाना, घुमाना सब करती है।

उनके लिए मार्केट से अच्छे–अच्छे कपड़ें और खिलौने भी लाती है।

पूरा दिन बच्चों के साथ खेल–कूद में बीत जाता है पर जब रात होती है तो बच्चे में रात में उठते हैं और रोते–रोते पूछतें हैं कि मेरी मम्मा कहां हैं?

और मेरे क्यों नहीं आ रहे हैं?

सिया के पास इन मासूम बच्चों के सवालों का कोई जवाब नहीं रहता है।

इसी टीस से आजिज आकर, सिया कुछ फैसला लेती है।

सिया आपने पापा और बच्चों के साथ भाहर छोड़ देती है।

एक नई जिंदगी की न्यू रखने की कोि ा ा करती है।

बच्चों से मां कहलवाने का प्रयास करती है।

मगर बच्चे कहते हैं कि तुम मेरी मम्मा नहीं हो।

सिया ये सब बर्दास्त नहीं कर पा रही थी।

आधी–आधी, बच्चों का उठकर अपनी मां और पापा के लिए रोना सिया को विचलित कर रहा था।

ऐसी हालत में सिया ने बच्चों का एडमी ान एक स्कूल में करवा दिया है। साथ ही घर पर भी एक केयर टेकर रख देती है। इन सब बातों के साथ उनके जहन में कुछ और भी चल रहा था।

कुछ महीनों तक सब ऐसे ही चलता रहा।

इस दौरान सिया, नायरा से मिलने के लिए बीच–बीच में जेल जाती रही।

साथ ही बच्चों की तस्वीरें और उनकी बातचीत भी उसे बताती।

तभी एक खबर आती है कि भाहर में दो युवकों की हत्या कर दी गयी है।

जिनकी पहचान रा ाद खान और विनय प्रताप के रूप में हुई है।

पुलिस भाव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज देती है।

उधर पुलिस को फिलहाल जांच के दौरान अभी कोई सबूत हाथ नहीं लगता।

हां, विनय प्रताप की भार्ट पर लिप्सटिक के नि ाान जरूर मिले हैं।

फिलहाल पुलिस मामले की जांच में जुट गयी है।

ये खबर सुनकर सिया, नायरा से मिलने जेल जाती है और वारदात के बारे में उसे बताती है कि विनय प्रताप और रा ाद खान की किसी ने गला रेत कर हत्या कर दी है?

नायरा ने क्रोध में रोते हुए कहा कि इन दरिंदों का तो यही हाल होना था। जिसने भी किया है, अच्छा किया है।

सिया, नायरा से कहती है कि ये सब किसने किया होगा?

सिया और नायरा की बातें आपस में चल ही रही थी कि तब ही जेल में पुलिस पहुंचती है और इसी मामले मे ंनायरा से पूंछताछ करने लगती है।

पूंछताछ के लिए पुलिस नायरा को अकेले में ले जाती है।

पुलिस नायरा से सिया के बारे में भी पूछती है जो उससे मिलने आयी थी।

नायरा बताती है कि ये सिया है जो उसकी दोस्त है।

कभी–कभी वो उससे मिलने जेल चली आती है।

नायरा से पूंछताछ चल रही थी कि तभी पुलिस नायरा के देवर को पकड़ कर नायरा के पास लाती है।

अब दोनों से एक साथ पूंछताछ करती है।

पुलिस इस दोहरे हत्याकाण्ड के तार पुराने मामले से जोड़ने की कोि ा ा करती है।

मनीश, नायरा को देखकर रोने लगता है और कहता है कि भाभी क्या चैन से मरने भी नहीं दोगी?

ये क्या किया तुमने भाभी?

किससे करवाया है ये सब?

ये पुलिस वाले मुझे बहुत मारे हैं।

इसी बीच सिया घर चली जाती है।

मनीश, नायरा के सामने फफक–फफक कर रोने लगता है।

पुलिस वालों से गिड़गिड़ाता है।

हाथ जोड़कर कहता है कि साहब!

मुझे कुछ नहीं पता, मैने कुछ नहीं किया।

नायरा मनीश को ढांढस बंधाती है।

इधर अब सिया की नींद उड़ चुकी है।

रात भर बेचैन रहती है।

उठती है, पानी पीती है और सोने की कोि ा ा करती है, पर पूरी रात सो नहीं पाती है।

मनीश का रोता हुआ बदहवा ा चेहरा उसको बेचैन कर रहा था।

हालांकि उसके मन में एक तरफ ये राहत जरूर हुंई कि इन पापियों को उनके अंजाम तक किसी ने पहुंचा दिया था।

पुलिस रा ाद और विनय प्रताप की हत्या का आरोप नायरा और उसके देवर मनीश पर तय करती है।

पुलिस जांच भी अब इसी दि ाा में आगे बढ़ रही है।

सुबह होती है।

सिया बच्चों को स्कूल भेज कर नायरा से मिलने फिर जेल जाती है।

वहां उसकी नजर मनीश पर पड़ती है।

मनीश की हालत ऐसी है जैसे तूफान में छप्पर उजड़ जाते हैं।

उसकी आंखें लाल थी, पलके ठहरी हुई।

एक कोने में बैठा हुआ मनीश ऐसे लग रहा था जैसे वह अपना मानसिक संतुलन खो चुका हो।

यह देखकर सिया से रहा नहीं जा रहा था।

सिया विचलित होकर नायरा के पास बैठ जाती है।

नायरा ने सिया से पूछा कि आखिर इस घटना के पीछे कौन है?

सिया रोते हुए...अपना संयम खो देती है।

नायरा के सामने बिलख–बिलख कर रोने लगती है और चिल्लाते हुए नायरा से कहती है कि मुझे माफ कर दो बहन..

.

पता नहीं ये सब कैसे हो गया?

बच्चों की मासूमियत से खिलवाड़ करने वाले खुलेआम कैसे घूम सकते हैं?

ये सब मुझे बर्दास्त नहीं हो रहा था।

नायरा, सिया से कहती है कि क्या बात है सिया?

खुलकर बताओ में मुझे कि क्या किया है तुमने?

तुम्हें मेरी कसम है, बच्चों की कसम है।

सिया, नायरा से कहती है कि आप जानना चाहती हो तो सुनो!

मैने भाहर छोड़ा तो सबसे पहले अपना हुलिया चेंज किया। अच्छा मेकअप कराया और फिटनेस पर ध्यान दिया।

फिर बाद में विनय और रा ाद को फालो किया कि वो कहां रहते हैं? और क्या करते है?

उनकी पूरी दिनचर्या खंगाली।

लड़कियां उनकी कमजोरी है ये बात मुझे पहले से पता थी।

फिर एक दिन मौका देख कर मैने, विनय प्रताप से लिफ्ट ली।

सिया पहले से ही सुंदर थी, छरहरी कदकाठी की थी और उस पर मेकअप और फिटनेस पर ध्यान देकर अब उसे और भी सुंदर बना दिया था।

विनय प्रताप की कार में बैठते ही सिया अपना स्कार्फ चेहरे से हटा लेती है।

सिया का चेहरा देख का विनय प्रताप के हो ा उड़ जाते हैं

वह उसकी खूबसूरती को एकटक निहारता ही रह जाता है।

इसी बीच सिया बोल पड़ती है, अरे क्या देख रहे हो!

लड़की नहीं देखी है क्या?

गाड़ी चलाइए नहीं तो एक्सीडेंट हो जाएगा।

विनय प्रताप, सिया से कहता है कि सही कहा आपने।

बाय द वे आपको जाना कहां है?

सिया, जाना तो दूर है पर आप हमें बस स्टाप पर छोड़ दें।

विनय, अरे बताइए तो कहां जाना है?

हम आपको वहीं छोड़ देते हैं। वैसे भी मुझे आज कुछ खास काम नहीं है। फिर थोड़ी बातचीत दोनों में बढ़ती है।

वहीं सिया विनय प्रताप को बताती है कि उसे कहां जाना है?

विनय प्रताप तेज आदमी थी।

लड़की बाज चरित्र का था तो मौका देखते ही सिया से उसने उसका फोन नंबर मांगा। पर सिया ने एक भार्त के साथ उसे नंबर दिया कि सिर्फ वाट्सअप कॉल ही रिसीव करेगी।

जब उसकी मर्जी होगी तभी कॉल भी पिक करेगी।

विनय को भार्त मंजूर थी।

विनय प्रताप सिया को छोड़ता और बिंदास वापस गाना गाते हुए लौट आता है।

अब विनय की बातें फोन पर सिया से होने लगती है।

सिया का पहला टारगेट सेट है।

सिया दूसरे टारगेट पर भी फोकस करती है।

एक भाम सिया, रा ाद को फॉलो करती है।

राि ाद भाराब और भाबाब का बहुत बड़ा भौकीन है और पैसों का लालची है।

वह एक क्लब में जाता है।

वहां उसके पीछे–पीछे सिया भी पहुंच जाती है।

राि ाद भाराब को इंज्वाय कर रहा है।

सिया भी वहीं एक पैग लेकर न ो में होने का नाटक करती है और फिर भाराब पीते–पीते राि ाद के पास आ जाती है।

दोनों में हैलो! हाय होती है।

थोड़ा डांस, थोड़ा मस्ती वाली बातें होती है।

माहौल पूरा फिल्मी है।

इसी बीच सिया भाराब ओवर होने का नाटक फिर से करती है।

वहीं राि ाद मौका देखकर सिया के करीब आ जाता है और सिया से कहता है कि अगर आप कहें तो आपके घर छोड़ दूं।

सिया ने मौके को लपकते हुए अरे आप परे ाान हो जाएंगे! मैं चली जाऊंगी।

आज थोड़ी ज्यादा हो गयी है, ये दुनिया बड़ी कुत्ती चीज है।

राि ाद मैं आपको घर छोड़ देता हूं, जमाना ठीक नहीं है।

वैसे भी रात का समय है ऐसे में अकेले जाना आपका ठीक नहीं है।

मैं अकेले आपको जाने नहीं दूंगा।

राि ाद की इतनी बात सुनकर सिया अपना सिर राि ाद के कंधे पर रख देती है।

ठीक है, आप भले आदमी लग रहे हैं।

आप मुझे घर तक पहुंचा दो।

लेकिन पहले मुझे अपना नंबर दो ताकि मुझे भी पता चले कि मैं किसके साथ हूं।

पता नहीं भाराब के न ो में मैं सो गयी तो आप मुझे कही और लेकर चले जाओ?

राि ाद बिल्कुल नंबर लो।

सिया नंबर लेती है।

दोनों क्लब से गाड़ी में आते हैं।

कार में बैठकर राि ाद मीठी–मीठी बातें करता है।

खुद को बहुत अलग और अच्छा साबित करने की कोि ा ा करता है।

उधर सिया को सब पहले से ही पता है कि राि ाद कितना गिरा हुआ इंसान है और कितना नीच है।

राि ाद, सिया से, वैसे कहां रहती हैं आप?

कहां छोड़े आपको?

सिया, राि ाद से इतनी जल्दी है आपको मुझे छोड़ने की।

पर मैं आापको छोड़ने वाली नहीं हूं।

सिया की इन रोमांटिक बातों से राि ाद को अंदर ही गुदगुदी होती है।

ओह! तो ये बात है...

आप चाहे जहां ले चलो, हम तो पूरी जिंदगी चलने को तैयार हैं।

सिया, रा ि ाद को भाहर के बाहर एक सूनसान जगह पर ले जाती है।

अब गाड़ी रूकती है।

आधी रात से ज्यादा का वक्त है।

पूरा सन्नाटा छाया हुआ है।

हवाएं ठहर सी गयी हैं।

जैसे कोई अनहोनी होने वाली हो।

इसी बीच सिया ने अपने बैग से छोटी सी एक वोडका की बोतल निकाली।

गाड़ी में ग्लास पड़े थे।

सिया, रा ि ाद से कहती है कि मुझे एक पैग और पीना है।

रा ि ाद नहीं अब भाराब कहां है मेरे पास?

सिया मेरे पास तो है।

यह सुनकर रा ि ाद मुस्कुराने लगता है।

सिया बहुत ही हो ि ायारी से रा ि ाद के लिए हार्ड पैग बनाती है और उसे दोस्ती का वास्ता देकर पिला देती है।

खुद पानी पीती है और न ो में होने का नाटक करती है।

थोड़ी देर बातचीत चलती है।

रोमांस होता है।

तभी रा ि ाद की आंख झपकते लगने लगती है। सिया मन ही मन खु ा हो जाती है।

वहीं अब रा ि ाद को बेहो ाी आने लगती है। अब सिया बैग से चाकू निकाल कर रा ि ाद की गर्दन पर रख देती है और वह घटना याद दिलाती है जिसने उन मासूमों से उनके मां–आप छीन लिए।

जिंदगी नर्क से भी बत्तर बना दी।

रा ि ाद एक बार विरोध करने की कोि ा ा करता है लेकिन न ो के आगो ा में कुछ कर नहीं पाता।

तभी सिया अपनी पकड़ को मजबूत करते हुए रा ि ाद की गर्दन रेत देती है।

इसके बाद सिया विनय प्रताप को फोन करती है।

विनय प्रताप हैलो! सिया...

आधी रात को कैसे फोन किया?

सिया, विनय प्रताप से, बस याद आ गयी तुम्हारी।

अच्छा सुनो!

आज की रात यादगार बनानी है मुझे, फोन पर ज्यादा बात नहीं करूंगी।

अभी आ सकते हो मेरे पास।

विनय प्रताप अरे! आप बुलाए और हम न आएं, ऐसा भी हो सकता है।

सिया तो फिर जल्दी से आ जाओं। सिया विनय प्रताप को लोके ान बताती है।

विनय प्रताप बदहवा ा गाड़ी लेकर सिया की तरफ चल देता है।

जल्द ही वह सिया के बताए लोके ान पर पहुंच जाता है।

वहां सिया, रा ाद की कार की लाइट बंद कर देती है।

विनय प्रताप की गाड़ी की लाइट सिया की गाड़ी पर पड़ती है।

सिया अपना बैग लेकर कार से बाहर निकलती है और विनय प्रताप की गाड़ी की तरफ बढ़ती है।

सिया को सामने देख कर विनय प्रताप कार रोक देता है और फट से कार से बाहर निकलता है।

फिर से वह हवस भरी निगाहें लेकर सिया को अपनी बाहों में भरने की को ा ा करता है।

सिया, अरे! रूको यार इतनी भी क्या जल्दी है...

थोड़ा मूड–सूड बनाते हैं।

एक दो पैग लगाए जाते हैं।

सिया बैग से भाराब की बोतल निकालती है।

पैग बनाकर विनय प्रताप को देती है।

विनय प्रताप ने पहले से ही भाराब पी रखी है पर वह झट से सिया के बनाए पैग को भी पी जाता है।

इसी बीच विनय प्रताप सिया से लिपटने की को ा ा करता है और सिया उससे बचने की को ा ा करती है।

तभी सिया के होंठ विनय प्रताप की भार्ट की पॉकेट के पास टच हो जाते हैं।

कुछ ही पल में विनय प्रताप न ो में एकदम धुत हो जाता है।

बेसुध विनय को सिया थोड़ा हो ा में लाने की कोि ा ा करती है।

अरे! विनय हो ा में आओ...

देखों उधर गाड़ी में तुम्हारे के लिए तोहफा है...

सिया, विनय का कॉलर पकड़ कर झकझोरते हुए कहती है।

विनय न ो में बोलता है, कहां है? क्या है?

सिया, विनय को सहारा देकर गाड़ी की तरफ ले जाती है और गाड़ी का दरवाजा खोलती है।

विनय की नजर रा ाद पर पड़ती है।

फिर सिया गाड़ी के अंदर की लाइट जला देती है।

देखो–देखो कैसा लगा मेरा तोहफा?

विनय, रा ाद को पहचान लेता है और भागने की कोि ा ा में लड़खड़ा कर गिर जाता है। उसके बाद सिया विनय को भी उस घटना की याद दिलाती है।

चीता और नायरा की याद दिलाती है और फिर चाकू से गला रेत कर विनय की भी हत्या कर देती है।

खूब इतमिनान से सिया हत्या के सारे सबूत साफ करती है और अपने घर वापस आ जाती है।

यह सब कबूल करके सिया, नायरा के सामने घुटने के बल बैठ जाती है।

फिर फूट–फूट कर रोने लगती है।

चीख कर कहती है कि हां मैं कातिल हूं, मैने ही उन दोनों दरिंदों का कत्ल किया है।

सिया, नायरा से... मुझे बच्चों का रात में अचानक से उठकर बैठना, मां–मां कहकर रोना, फिर रोते–रोते सो जाना, यह दर्द बर्दास्त नहीं हो रहा था।

उसके बाद जब मैने जाना कि ये दोनों दरिंदे जमानत करवा कर बाहर चैन की सांस ले रहे हैं तो मुझे उनकी आजादी बिल्कुल भी रास नहीं आयी।

पर बहन मुझे ये बिल्कुल नहीं पता था कि इसमें आप और मनीश दोनों फंस जाओगे?

मैं अब जा रही हूं, पुलिस को सबकुछ साफ–साफ बता दूंगी।

निर्दोश मनीश की जिंदगी बर्बाद नहीं होने दूंगी।

सारी सच्चाई जानकर नायरा, मनीश को बुलाती है और सिया को चुप कराती है।

मनीश को सारी वारदात बताती है।

बच्चों की खातिर नायरा, मनीश को इल्जाम अपने उपर लेने के लिए मना लेती है और सिया को समझाती है कि देखो!

पुलिस हमको और मनीश को आरोपी बना चुकी है।

तुमको बच्चों की कसम है, तुम किसी से भी कुछ नहीं कहोगी।

तुम्हें अच्छी मां बनना है।

बच्चों की अच्छी परवरि ा करनी है।

साथ ही एक वादा और करो बच्चों की खातिर कि आज के बाद तुम कभी मुझसे मिलने जेल में नहीं आओगी।

सिया रोते–रोते जेल से बाहर चली जाती है।

नायरा और मनीश पर मुकदमा चलता है।

दोनों को उम्र कैद की सजा सुनाई जाती है।

सिया धीरे–धीरे बच्चों पर अपनी ममता की चादर ओढ़ाती जाती है।

नतीजतन बच्चे सिया को मां कहना भुरू कर देते हैं।

लेखक परिचय

दीपक सिंह चंदेल

शायद जन्नत भी इससे खूबसूरत न हो, कम से कम मुझे तो अपना बचपन ऐसा ही लगता है।

आर्थिक तंगी और अभावों के बीच बीता बचपन, फिर भी स्मृतियों में आज तक सबसे समृद्ध समय बनकर बसा है।

बाग़–बगीचे, सावन में गूंजती कजरी, झूले, मित्रों के साथ बिताई दोपहरें और छोटी– छोटी खुशियों में जीवन को भरपूर जी लेने का वह दौर आज भी मेरे भीतर जीवित है। यही वे पल हैं, जिन्हें मैं अपने जीवन की सबसे अनमोल पूँजी मानता हूँ।

समय बीता और कॉलेज जीवन शुरू हुआ। यहीं से लिखने का सिलसिला भी आरंभ हुआ। शब्दों से लगाव धीरे–धीरे जुनून में बदलने लगा। इसी रुचि ने मुझे पत्रकारिता की ओर प्रेरित किया। एक संस्थान से पत्रकारिता का प्रशिक्षण लेने के बाद दिल्ली और लखनऊ में कुछ वर्षों तक इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में कार्य किया। इसके बाद समाचार पत्र में काम करने का अवसर मिला।

पत्रकारिता के व्यस्त जीवन के बीच भी शब्दों से रिश्ता बना रहा। शेर–ओ–शायरी और गीत लिखता रहा और मन में संजोए भावों को कागज पर उतारता रहा। धीरे–धीरे यह शौक परिपक्व होता गया और अब उसी यात्रा का एक पड़ाव चीता के रूप में आपके सामने है। मेरी कुछ रचनाएँ और

शेर–ओ–शायरी सामाजिक माध्यमों पर भी उपलब्ध हैं। गीत लेखन का शौक है, इसलिए कई गीत अब भी मेरी रचनात्मक तिजोरी में सुरक्षित हैं। कुछ अन्य पुस्तकों पर भी काम चल रहा है, जो आने वाले समय में पाठकों तक पहुँचेंगी।

मेरे लिए लेखन केवल शब्दों को पन्नों पर उतारना नहीं, बल्कि जीवन को समझने, महसूस करने और उसे अपने शब्दों में संजोने की एक निरंतर यात्रा है।

पाठकों का स्नेह और विश्वास ही इस यात्रा की सबसे बड़ी पूँजी है।

जय हिन्द।